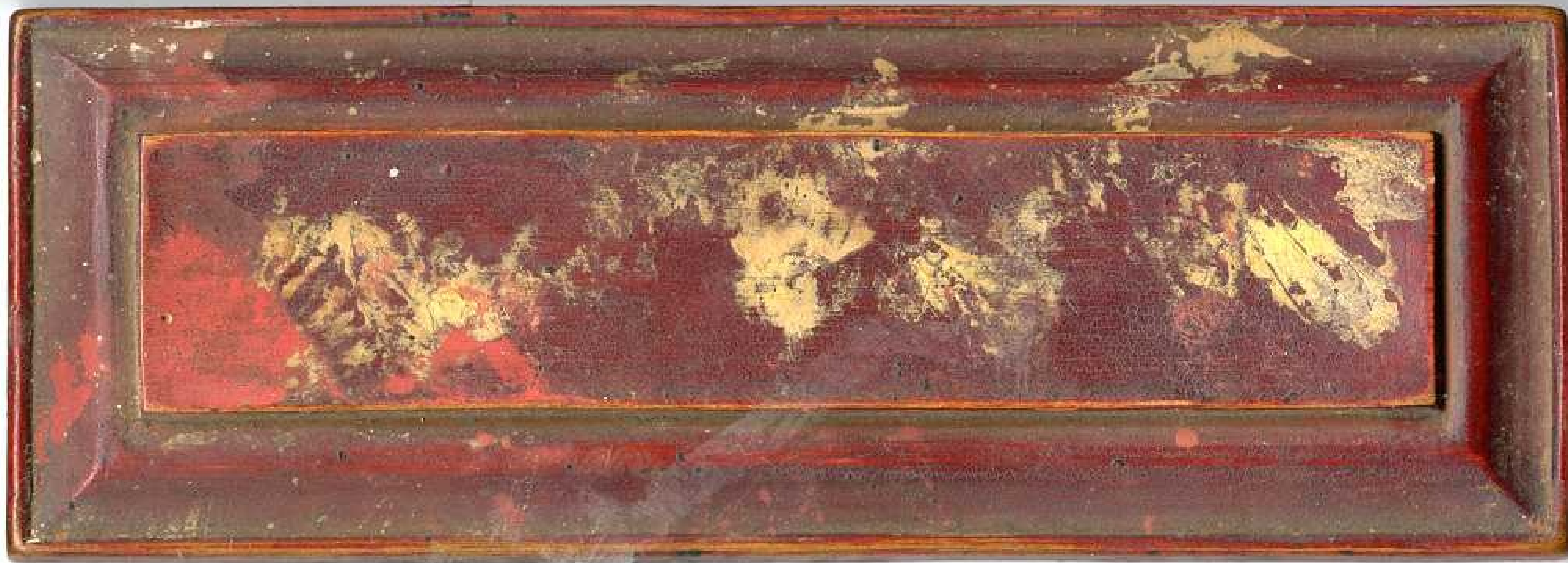


ओं नमः श्रीमहेश्वराय
मानू· हृदीकहृसकदंप
श्रानुषूवाकूकनिंबल
लपूवैकयाहृनाउाँवि
हूनप्रहायानलिमाउद

य ॥ १ ॥ अथवक्ष्यत्श्री
शास्त्रेनाय· विंडयोवो
श्रया अथअथानैक
नानाउाँविश्रहृका
युहलयकाअनैवक्र १

स्हृदयाहृरव·श्वलिक्षस्थनै·समस्तदेवलोक·मनुष्यलोक·यदूयानिसं
मांबत्नाकिश्रउागुरवनाउाँ·श्रीशोभावनसीहक्वहउ·अभागइदाके·ॐ
यलोपकिंश्रानुहूक्षिय·अथदिनदमनयाकह्रैलाकि[illegible]पवनमर्नि·वन
नकिफवपैविक्षाक·गुश्चाकलल·महायावावाउाँ·वडकूस्थव·पथ्वीम
कूनमन्हैहृयीाउाँ॥ १ ॥ विवृह्नस्पूञ्जीकाक्र·प्राहुहूवमस्त्राव

नः॥ यो लावयव्रज्ञवल॰ सोकं अयाम हूत्म हू॥ ४॥ गथितञ्चवज्रअवव

ज्ञमवञ्चलेसा॰ त्रिकालनवैन्द्यानम्ह॰ पृनैपमिं ध्पेरुः॰ हेंजिरवाविका

सभानधावा॥ अन्वकक्कलक॰ उंहृयाषुव्लसावनथैं [illegible] हूंहाल [illegible] न

[illegible] जाकिवव

[illegible] नाविप्किमाउविपिका [illegible] या [illegible] पक्षा

[illegible]

२

त्रिशक्ञ्ला॥ २ ॥ हूदोकलगपृम्हकें व्यम्केवज्रपाधिकिषु॥ इ्दर्दो

कउमके ह्रीयं॰ वोलवोकसावृधिकिंषु॥ [illegible] ध्वाकिंतैप्रुह्र॰ ने॰

अूंनेलवज्रयाहिमाञ हूं॰ श्रियक्रृं॰ दिं [illegible] राह [illegible]

ज्ञेक्षिवलहू॰ लुक्षृ॥ विदिलवृदिकोआदस॰ [illegible] हिंव्रप्रहू [illegible]

हा॥ ३ ॥ उसोलयाहिंषुव्धकंकेप्रहू॰ त्रवज्रकोधिहिंषु॥ पुहापाय

महाकरुणा। ऊँ गर्द्धभवक्त्रे स्वाहा॥ पञ्चमाहाकिनवज्रपद्मिनाओविष्क
कर्म। ऋ्षिक [illegible] याना ओ बान [illegible] ध्वज्रयामवकाकि बननी ह
म [illegible] ॥ [illegible] ओयाव प [illegible] महाकरुणा २
[illegible] सानया [illegible] पव व [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] स्वाहा यो मुद्रिके [illegible] विग्रहकुलि हि ॥

वज्रकुलक वेताले स्वाहा प्रचण्डविग्रहे ॥ चिह ज्ञानन्दयाना ओ [illegible]
[illegible] मान [illegible] महा [illegible] धर्म [illegible] याना ओ बान [illegible] वृद्ध [illegible]
[illegible] ओ ध्यान [illegible] सवा
[illegible] नाओ [illegible] ॥ [illegible] प्रतिष्ठना थये
वज्रहगवकन्ध्यागाक ॥ कर्मओं लिपुटाहकुत्वा। ऊँ दमाहस्कि हि। प्रम ॥

मीसेवकु [illegible] लिसथा [illegible] पालयाह्नु [illegible]

हाजाकह [illegible]

कागनपतिस्मन [illegible] ॥ [illegible] मर्व्वक्रियायममार्थय. मदैकेपायमवि ४

ह्मा४ मायोजाताहिसैवाश्च स्यथाबहिहवाम्पह४॥ [illegible] पनिस [illegible]

हयाय [illegible]

[illegible]

लिस [illegible] मायोजालयाकह्नु याणु [illegible] पनिस्यन. [illegible]

गुरुह्ना [illegible] ॥ [illegible]

अङ्गानर्पक मानानी. [illegible] थवाकुलचकसा॥ हिकायसर्व्वसत्वानी. मन्नूल [illegible]

लाफय॥ [illegible]

[illegible] नियनिस [illegible]

[illegible] सर्वसत्वा [illegible] लोक [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] प्रकाशयन्तु [illegible] भगवान् [illegible] महा

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] महा [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] महा [illegible]

[illegible]

रआलयाञ्चिलर्नीसिगाक्र॥ ८ ॥कगर्वंह्वानकायस्य.महाक्ष्मीघस्यागीत्वम
४॥मैह्रश्रीक्ष्यानमलस्य स्नानतूर्लिग्धयैह्रवक्ष॥
पिंनभं.ल्रत्हवविक्र.मैह्रश्रीच्यथुगनुस्य
यां.धू.ह्रस्वकमैगुथ्र.ह्रयामकयगनुकामि.ह्वानकाकहिं.याञ्चालव्हालव्ह
घसपा.नै.ह्वयैह्रयाग्रुखमा

१० ॥गहैप्वार्थामृह्दनार्थाःमहार्थाममस्माधिवान्तु॥आदिमच्याकक
ल्याहि.नामःसैगिकिच्छूह्रमौक्ष
ल्यायुजुर्थावव
ल्पाइह्रमगुह्वान.क्रयायाग्रुखमहाह्वानयाग्रुकअथमममकर्मातुस्ल
प्रानियानर्पि माक्रगाणिवाणकाउक.सामस्र

स्वानकु उकुलगु [illegible] सहृ। आदि से. मध्यम सं. अंक काल सं. मंगल सं

पूर्ण हृदय पूजा। ध्वना [illegible] मालगु महा [illegible] समै प

हुंहु उगु नाथिं न [illegible] नाम सँ तिति [illegible] ॥ ११ ॥ याकी निर्मा शिलीं बु ग

द्धे. राशि ध्यन [illegible] नाग्र [illegible] प्रत्य [illegible] सँ द्खा. [illegible] पूजन श्र पूजन

॥ हृदय उ न थिं [illegible]

[illegible] लिसन [illegible] उ थनि द [illegible] प

लिसन. पूजन [illegible] यानु [illegible] नाम सँ ति तिथ

[illegible] यानु मालु ॥ १२ ॥ मायाजाल [illegible] महा [illegible] प्रणीय [illegible] ॥

महा [illegible] प्रम [illegible] ति हिं ॥ [illegible] नाम सँ ति

[illegible] यानु [illegible] यानु [illegible] ध्वन

सर्वंतिकी प्रकाश याना उ कउ न... कउ थव न... वज्र थव. पनिस्यनं ज्ञान

न याना उ [illegible] महा [illegible] नं थ्व नाम सर्वंतिकी [illegible] ॥ [illegible] जं

चेनाम अविद्याज्ञामि. निर्व्याणं च विहृ ग्रसमय ४ ॥ यथाक्रम याना नुम [illegible] नाथसं ८

द्वे सं व कुलानुष्ठ [illegible] ॥ [illegible] नाम [illegible]

[illegible] प. चिना [illegible] याना [illegible] ॥

व हृ पनिस्यनं [illegible] व पनिस्यनं. [illegible] पाउ [illegible] जिन [illegible] पाउ

याथयाय ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १४ ॥ प्रकाशयिष्य सत्वानां. यथाशयविशेषत ४ ॥

ज्ञान [illegible] ना सोय. [illegible] न हे [illegible] याना [illegible] याना [illegible] वज्र पा

नि ध्वसमस्त सर्व सत्व प्रानियात चुकात [illegible] याउाल ऐश्वर्य सगाइ
श्व दकोःमाव कयानि मिर्हि नैजल न। क्व लोक द कोः याकल [illegible]
ज्ञा ह्नियाय कल। १३॥ अथ वैमल्य स्त्र गुह्य कन्द्रोः वज्रपाणि कथा नकल। ह्रसी ९
उ लिपदाहल। पुष्कवाय हिकिनोः पुमल॥ [illegible] जाथि याक
जथ्याम कल ग्राथ क कृ निलक पूर्थल [illegible] स्यान॥ नपे पार्थनायान

[illegible] अलसाया हाकनि या हथ हाज्ञ क्लल पाउः मिन काकुनाउाक।
मूनाया हूउ देवाउा वज्र पाणि निवान हल॥ १३ ॥ अथ वमा हान
ाथा पाउमल॥ अथ प्रार्थ माया कगु मिलि जिन पूजा ॥ ६॥
॥ ७ ॥ अथ स्वम्भु निरुपानावा नः सेद्ध अधिपधा हमल॥ नीर्घम
र्याय काहल। हकी का स्वम्भु स्वाद्यकु थाल॥ [illegible]

भावमृतिच्च तिस्यनन्वका पामियाकवाउदवनःर्षिनमृ भावमृतिम

न्सानम्यकौ दृह्वनथानजयागुहु [illegible] नीनःर्पिनस्कह गवात

बीनःसानमनहृदवलाक [illegible] ठां [illegible] वाः [illegible] लोकवःउ १०

हमनहा [illegible] द्ध नयविष [illegible] घाणु जिकाम शीनहु [illegible]

विकाकमा॥ [illegible] क्षिर्नदाथ्दस्थलावातीमरवायद्र याक्षादनाले

साक्षमामयकलनैश्वहुर्मानालिसासनै॥ हनैभर्षिनमृ साक्षमृनिह

बीहमदालेषा [illegible] हैलावयाकहवयाऊमस्ह्रनहिजाउविशदमह

[illegible] हिकाल [illegible] नाउाथदी [illegible] ठपुदी [illegible]

हृयायकहहनपृक्षवषा लिउविपापहृदुयहान ऊ [illegible]

[illegible] ह्याहुभालयानाउावीनक्रनवुभीव [illegible] पक्ष [illegible]

रूपं कृत्वै सर्वं दुःखमनाविन्दुश्री ॥ ७ ॥ श्री लोकनाथ पिलाचित्वा वज्रकाम
धनपाति ॥ वा ॥ पुण्यं ह्लानकं तु स्कन्द्रा वज्रपाणि महाबली ॥ ७ ॥ पिंत [illegible]
[illegible] नि [illegible] दिहन्न यि डायक [illegible] ह्ला [illegible] पानुशय वुक्षा [illegible] ११
[illegible] लाका आयस्ला [illegible] पानालदौ नायं [illegible] गुण हा [illegible] लमायं [illegible]
पाया पुगुठाय धापिंनस [illegible] मचं [illegible] वज्रपानि [illegible] डयद धवि [illegible]

॥ ७ ॥ साधु वज्रधर श्रीमान् साधकं वज्रपाणय ॥ यह्लैं [illegible]
मार्थ्य महाकरुणया [illegible] हनै [illegible] साधक मूनि पना [illegible]
यकाडं विश्वाने [illegible] वज्रपानि गुह क [illegible] गानायं [illegible]
कं [illegible] गानसं [illegible] कहि कया यंगु निर्मिहिं [illegible] महाडा गा [illegible]
[illegible] महाकारुनाव [illegible] हाय यबली ॥ ७ ॥ यं

महार्थ्यनाम सँगि क्कि । प्रदि क्राम घनाम ति ॥ मेहः श्री ह्मानकाय स्मल कुत्थे
नैस मूयक ४ ॥ ग वज्र याग नांथि गुरुखकून ढ्हाः महागुरुस्कन लेया गुरु
थगु नासः सँगिकीव याङु स्मस्कु घसँ ह्माव या प्र विक्र स्याय गु थेगुकथ १२
नधक श्रीमेहः श्री या गुह्मान मक्रथ्यरवकून ढ्हाउ थक श्रा ह्माद यकल
॥ ७ ॥ हस्ताय दम याम रव अहम गुस्क काथि प ४ ॥ स्वम काय्रमन

हस्ताथ कु गा वा त्रि कि ॥ हनैमम स्कुथ्य पाप माव कोपीडा थगु लि कथ
मस्यागुक था श्राल स्या मेहः श्री या गु कथा मेहः श्रीग थिन स्कु वाल
म्हान गा वि थथिन स्मयागुकथा धावल
ओढउ ओ निक मेहः लथक श्रा ह्माद यु ॥ प्रकि दिवनाम धाय हू
॥ थ्रू कि लिप्त स्याथि निंद्व द्धगु सिंधाक ॥ ७ ॥ ॥ अथस्वक

सू धीहराक्षान.सकलसकुकूलीसहकु॥सकृविद्याधवकूली.व्यवलोक
कूलकृयी॥त्रूधपतीलिवकृपानियाकत्वहनी॥ष्ठासूलिनी.पूनर्वाव
वकृपाधियागुकूनायवचनरुनाअ.खुतुलिकूससदनसधेल.वूखमा १२
र्लयागुरवक्षादससविली.मनकवाहिनियीकथायो.सधिपालक्षियास
कुयाकूलसकुकाय.पलपपासर्धीबकुनापलीहली.सकेविद्याव

वलर्पवासकृवाविससलसकली.ध्वपंनिसकलीहली.व्यवलाकिद्यपा
गुपासत्वकूलश्रीमकुश्रीलीहूल॥१ ॥लाकलावीकलकूलं.लोका
लाककूलीसहकृ॥महासकुकूलीवाग्रे.महाक्षीरवकूलसहकृ॥ध्वलाका
लव धर्मलाकपतिथासीसाम.ध्वकनिका॥निकुलिकूल.धसधली.ध्व
कयाकूलत्वी.महाकृडाकृमृकूखयवकृमूडाक्षादियीअग्रसेउलम

कुलछ्वसपाल.महासुखचक्रसकुलपाकुलछ्वसपासहली॥
२ ॥षट्कुलावलावनगाथा ६॥ पगुलिकुलेयागुहस्मिलाकनि
पुगुष्व॥ ६०३॥ ॥ कुमोरवनसकुनाजानी.सेयकामहदाछ १४
यी॥ सुनुस्याद्वहस्मिनीगाथाहारवनं स्मिजान्यह॥ सुजेंहापायागु
खगुलिकुलङ्.समस्के मनुयायाञ्जे हयपवमार्थन्तकाकालखदू

यगुन्हता.सुनुस्याद्वचर्म्मिनीगाथा८थ॥ धायञानकवर्म्मन.सेपत्र
यानाच्छेनगुगाथा.सर्वह्र.थागकपनिस्यनञान्यलधागुमें.श्री
याग॥ थाथ्व॥ १ ॥ [illegible]
४॥ज्ञानमूर्त्तिनहंवज्र.वज्रानीग्र पवहीनी॥ थ्वहादंशंकुलआय.
पवमाकवरुदयस्वानगु.ज्ञानमूर्त्तिखपगुलिसिजाधीयज्ञमूर्त्ति

हृदयिउ ॥ वज्रयाक्षार्मलिखि सीवानक्षयासह्य याउ ॥ २ ॥ ॐ वज्रतीक्ष्णदु
ह्खच्छेद प्रज्ञाना ज्ञानमूर्त्तये ॥ ज्ञानकाय वागीश्वर अरपचन नायकन
मः ॥ ॐ वज्र धायगुन्यका धीक्षुद्र स्वस्व भूनेगा इु ४ म्प हू नकी गुमहाहू १७
धस्व मान्य कृष्ण प्रज्ञान सी कृ कायउ अम्बहान पवमहान शिवम धवलपू
क ज्ञानकाय वागीश्वर धायगृ हूप पलमहान धलल पेविइकृ कर्मी

हृत्श्री लेजूव यच्छर नाय का थर्पी महृ श्री यामकुथधि क्षपवमस्थ वया
कनमकास ॥ कृ ॥ मायाजालाभिहितौ वाचिक्र मयमया पाकृ गण स्थ
याज्ञालया पवमा मधया स्मकसापुरुष ॥ ३ ॥ हृदयथा
गवानुवृक्षा सैवृक्षा ३ कालसमकव ४ ॥ अकालसर्ब्बव र्ष्हे दिक्षास महायोप
वमा डेव ४ ॥ स्ववकृ पायर्मी याप पिपाद्दिन प्रवास पाय ज्ञानम स्वनूय

नं.अकार [illegible] आय्वन्तध्व ॥ अकालध्यया गुगा थिं नष्मकना सम्मक्त जक

यथाप्रलापुर ॥ आदि अक अलोध्वि वृद्ध स्वभ्रप गुवन गुसिं नहँ सँकल

र्थ आवीला यच्चपुरव ॥ १ ॥ महाप्राणेभ्ध हूं घत्पादा.वागुदा हल्व वर्डिंक १३

श्च सर्व्वाहिनापह कोरहूत सर्व्व वा गुस्यु कल्पि नर्थ४ ॥ हनी गाथिं नष्कम हुं श्री

माधर्क थत्यला महूरश्री उक दों [illegible] हाप्र [illegible] नलाद्व स्व नुप.श्रमाधधमनोड

त्याहि ह्याउं विघ्न कष्ट ॥ हनै गाथिं नष्ट नम थिं न गु वच्चन ह्मा सँकल.ला:

थम ऊँ उ.समस्त याक ०० को० लं विउ अष्ठ. नम [illegible] थर्म्मयाः हुम्.लक्षु

या गुख.समस्त वच्चन ह्मो क उं न्मेया व्वन.के:.स्वरूप.सिद्धिव [illegible] या

कष्ट ॥ २ ॥ महामहमहायागा.सर्व्वसत्व नर्हि कव४ ॥ महामहमहाडु

ख.सर्व्वक्रश्न महाविपद ॥ नैगाथिं नष्ट म हुं श्री भाल ला [illegible] उं ओ

कस्तन्मकनामद्गुहन्तैसमस्कप्रागियाहृदयसै क्रोजायानाउक्षिकवि
क्षःवाय्कङ्क्रिकउावनक्षःहकमनीयंविहवगेहृक्षसमक्लैथनानाद्गुह
द्ववमान्वकृक्ष द्गुठवहाकहाउाक्षेस क्षायगक्रुमद्गयकृक्ष ॥ ३ ॥ महामह
महामाहा.मृहचीमाहसृदनठ॥ महामहमहाक्षाक्ष.महाक्षाक्षनिपमहा
नृ॥ाहनैसुउानापैभाहज्ञदृक्रुहानउपदयामविउाः कउस्वाकैकउवकम १७

नैकृक्षुत्रिक्षयाकमान्वकृक्ष॥ हलैगपिंगुक्षूतीक.कउान्वाकैक्राऊर्वनिस्
हवयानाउामान्वकृ कउान्वाकैक्रावैयानाः क्रूकृत्याविनि कउान्वाकलैक्रू
याकमान्वकृक्ष ॥ ४ ॥ महामहमाहास्ताहःसर्वलाहतिसैदनठ॥ महाकामा
महाभेघ्यो.महामाधा.महानकिठ॥ नैक्रूक्रि कउान्वाकनैलाक वलनसैह
कयानाउान्वानथ्वलाकयासमसःयालाहःमान्वकृक्ष.हनैगपिंनगुवाल

मासमस्त काम्मूनाङ्गलिहि थक्व ङाममहासुख्व ञ्चानन्द विङाम्ह: हनेगाथि
गुहर्षमान सेहः काः थलसात्नुकिर्दें थिसाम्ह मानुदाङ्का॥ ७ ॥ महानूपो
महाकायो महावर्ण्णो महावपु ४ ॥ महानामा महोदारो महाविपुलमण्ड १८
लः ४॥ हनेगाथिन सेहः श्रीथलसात्नुकिनर्दें थवबूपडाम्ह जातिकडाः
थन गुमवोलपथि विर्दें मह्न नगुबूप॥ हनेगाथिं थ्व नसा महानाम्हः

जाता: कडाथ्व नगुडथाव याकम्ह महादानि स मसद्डाम नथ्व न्हः नाम
कासँमजाम्ह: महाम्व कृ यानायकम्ह॥ ७ ॥ महाप्रज्ञायुधधरो म
हाक्लेशाङ्कुशाग्रणी ॥ महायशा महाकीर्त्तिः महाज्योतिर्महाद्युति
हनेकडाथ नगुमस्म थलन्ममे विम्ह कम्हः गाथि न्ह गुलमुथलसाः महा
ह्नान सम्ह थलनषीथिड्ङ म्हः हनेगाथिन सुथः लहा: महा इ ४ थ्व याः

स्यव ह्न्दु मियाय न महा श्रेष्ठ समध बल पू कडाध्यनङ सबानाडामिगलउ
हृ मकीहिंयाक क हनेमहामायायाव बि ॥ ७ ॥ महामायाश्रयः विद्यानां
महामायार्थसाधकः ४ ॥ महामायात्रिदिनकी. महामायानुज्ञाशिकः ॥ त्र १२
थीं नक मेहृश्री धक भल साकडा धन महि माघ कन श्रुबा मा याक
नश्राहानसहृहिनकाडो विख्याक क्षमहापेंदिनधू. हनेनापिं क्षु

माहाप्रार्थेड हन पदविथाउबाल क्ष हने ध्यसैताबसमायास हंतु
श्रानकनाश विश्रु क्ष क्ष ॥ ८ ॥ महादानपतिश्रेष्ठः महाशीलधरा
धरी ॥ महाक्षान्तिधराधीरो. महावीर्यपराक्रमः ४ ॥ नापिंनक्षमें इ
श्रीनाश्चलहा. दानपतिश्रेष्ठ श्रायश्रनक महाहवायनतु धानयाक
क्षमहायाक्षिल. महायानिक. हनेमायालबलबधू. हनेमहाक्षेउन

कृमावकउल्लमङ्कहुनमूर्यासिमीपयाकलिमर्यासिमीवलूताकस्मथ
॥ [illegible] महाध्यानसमाधिस्थो महाप्रज्ञागभीरबुद्ध[illegible] ॥ महाबलो महाया
य. प्रज्ञोपिविज्ञानसागरः ४ ॥ गाथिनक्कमी [illegible] श्री [illegible]
माथि स्त्राध्य[illegible] महाकराघनसुरुमाविध्यानस [illegible]
नक्क. थालसाङ्कलकुलहानसबिलथलनपं तिस्काक[illegible] हनंगाथिन २०

महाबलवकमहाउपायलिडाकस्कालयासम्भूमकथक ॥ १० ॥
महामैत्रीमयामया. महाकारुणीकाग्रधीः ॥ महाप्रज्ञोमहाधी
मान्. महायायमहाकृति ॥ गाथिनक्कमहश्री [illegible]
[illegible] यान्वाकाप्रानियाक्कमहाक [illegible] याउाहि [illegible]
थिनक्कमहाप्रज्ञा[illegible] कालसागथाम[illegible] याउज्ञानतत्त्वाक ॥ म

ताउ पकाप्रिङ्याउ। हुडां रुचनकार्य्ययाय हुडां क्रुध्वसपाव॥ ११
॥ महाप्रज्ञि वशापका। महाबलेमहाउदंव। महर्द्धि वाम्से हि माक्काम
हावल पयाक्रमः॥४॥ [illegible] गायन क्रु [illegible] ज्ञि
[illegible] भा [illegible] महा [illegible] तिनि
हुडां [illegible] महा [illegible] समस [illegible] याे [illegible] याउ [illegible] २१

महापयाकर्म्म पूउाक्रुध्वसपाव॥४॥ १२ ॥ महाकवाद्रिसहर्ल। महा
वज्रवचाध्यनः॥ महाक्रुवाम महायोङ्ग। महारूपहर्यदवधः॥ [illegible]
[illegible] याउ [illegible]
[illegible] ध्वसपाव। [illegible] महा [illegible]
[illegible] पाय [illegible] महा [illegible]

यानकक्षयाहितेःमहारुयंकलक्षःसमस्तविघ्नयाकरुयविउक्षध्व
क्षःन ७३ ॥ महाविद्यारूमानाथोःमहामञ्जुरूमाञ्जुनुः४ ॥ महायान
नयानुरूःमहायाननयारूम४ ॥ थ्विनक्षमे ह्श्रीक्षनसामहावि 22
द्याक्षयःपउक्षविमहाविद्याखःमिसमक्षनउाकडाखनगुमक्षयानु
नूहयाउाविक्षःकक्षमहायानयापविपाकिदयकंउरूमक्रियास

डाक्षःथ्विनगुमक्षविद्यासडाक्षहनीगथ्विनक्षमहायानक्रियान
क्रियामलगुक्कडा ॥ ७४ ॥ वज्रयानरुमहामञ्जुलनाथ। श्वकुर्दथ
॥ पाक्रिस्ममक्षसिमपप्रमहामञ्जुलयाउख्वहलग ॥ ॥ ७८
९ ॥ महावैनावनावज्रःमहामोहिमहामूर्ति४ ॥ महामञ्जु
नयाहलामहामञ्जुनयात्मक४ ॥ हनीगथ्विनक्षमे ह्श्रीःवाखल

सा॰श्रीदेवाचनकपारागका॰थिनगुरुखलावमहाह्वाचक्रमानवर्मीया॰
ह्नन॰क्षमाजयाक मूँस्यहाकप त॰हलेवी॥ थिनगुमहामकृउस्याहिइउ
गुमक्तोकलमहिकवाचाखलया॥ १ ॥ दशपारमिताप्रणी॰दशपार २३
मिता॰श्चयस॥ दशपारमिताम्बुद्धि॰दशपारमितानयश॥ हलेवील
पारमिता॰दानपारमिता॰क्षान्तिपारमिता॰वीर्यपारमिता॰ध्यानपा॰

नमिता॰प्रज्ञापारमिता॰वलपारमिता॰ज्ञानपारमिता॰अभिज्ञपारमिता
प्रणिधिपारमिता॰थ्वतेगु॰दिनदशपारमिताग्रहस्थलक्ष्वपस्क हलेवी॥
थिनस्क॰मिउपारमिताया॰म॰दिनश्चसयहक उथाह्लवप हलेथ्वदश
पारमितासक्लाकोच्छवलपाउ॰स्वाकउवेवहावड मियानाउइउाक
हलेदशपारमितानवलवपानीनिस्तिप्रविक्रियाकाम ॥ २ ॥ द्याह

मिखयानाथ॰ दृथाहूमिप्रुकिषिकु४॥ दशाह्मनविगुजाना॰ दशाह्मनवि
गुऊ्द्रूकुव॥ हनेगाथिंनक्र्मइ श्रीचक आलसा॰ मिगुलिकु वनयाखामि
मि॰ गुनो ह मियानायकगथिंगुहू वननेवके आलसा॰ विमनाहूमि स
हूकुया॰ हूनेगाना॰ प्रुलाकनी ॠ विष्फिकि॰ निकूवकि॰ प्रेलाकनी॰ ह्लासवानि
ऊकनिहूकु॰ ह्वखावकि॰ थकियाखामि॰ हनेगाथिंनक्र आलसा मिगुवि

वपूआदिनसनिनपाल॰ यावमिकाने॰ विवर्द्धयानाउविड्डीयाना
ऊमलनयाउवानक्र॥ ३ ॥ दशाकानादवाथार्थे॰ मृगेन्द्रादव
वनाविहू४॥ ऊगेषविश्वार्थक॰ वा॰ दशाकानावशीमहान॥ गाथिं
नक्र्मइ श्रीनाआलसा॰ श्रीकथागाह कोदिने मिमभिगुविजाकादनि
नकथागानवह्नयासजाखदूप॰ समलाध्वसैलावदयकाउ॰ मिगाप्र

कालनं ल्हु श्रीयउासयाकथिंन कुथ्वसेसालयायाकुलम॥ ४ ॥
ऊनादीगिप्रपंचात्मा शुद्धात्मा कथ नात्मक ४॥ हृनवादीयथावा
दीःकथाकालिङ्गनन्यावान॥ थिंन क्रमेह श्रीनाथकथाल साध्व २७
सनंला दिनं नक्षदउमड्ःसेमानसःपापक्रा दिनं दाश्वनंमध्ल
निर्मलचित्त लःअजुपाहानस्वरूपभंःहनं॥ थिंनक्रपुष्प ङलनं

स्नुठदकोया दादत्त्वज्ञाकम्ह॥ प्यज्ञाकहल जथेम ल्ह हयीआथकम
थ॥ हप निसन क्राह्रादयकाउाविक्रा नं॥ ७ ॥ ऊर्ध्वपाद्यपवादीवम्ह
त्काटिवावक्लिन ४॥ नेबात्म्यसिंहनीनादःकूटोर्थमनको यव ४॥ थिंन
क्रमेह श्रीनाथकथाल सानसमस्त क्रिआङं कुयासःनिर्मिर्हिन ङत्यनिया
लाङाथ्वसेसाल दयकुम ङहिवकं पंचज्ञान आत्मापथ्वरहन आत्माव्वा

नमः हलं ध्व वनयात्राज्ञासिंहयाथिनगु पत्राकर्म्म थउाम्र॥ ६ ॥ सर्व्व
त्र एमभाचया मि, कथा गन मनाजव४ हिना जिमा विविज यित्व क्वाद ह्रिं
महावल४॥ याथिंन म्र थ्व म्र भेइ श्रीथव खाल्ल सः समम थ्व सी ल सउ
सहव पेइ ३ ाक्मा याथिंन म्र ननयाथिंन ऊँडम ऊँन थ्या वाज्ञा स्वान सःसम
सः का कृ ऊा यन थूम हंन्व कु सैंवा नम्र महा चोदेव ल ऊँ गम्र थ्व सया ये

॥ ७ ॥ रागम सूख्याग घर्येगा ए ध्व ल्व गन प फिर्व्व मि ॥ महानसाव द्योवया
कूलनया महानय ॥ हलै याथिंन म्र मेइ श्रीथिक खाल सा समम गनय
माकु महाव यीथ्व वडे थ्व र्म्म से यानया थाकुलमन याद्वसोया का श्रीम
हापूलावथव म्र त्र का काभे म्रात्मा थाय छु पु विसदिनसथे इयो ऊँवि कार्फ
म्र ॥ ८ ॥ वाशीश्वराग पर्कीवागूमी वा वह्य कोवघक ॥ हमावाग़ मध्य

वाद्दीन्वःन्वहुर्स्लोपद्म्भकः४।।गार्थिनस्थश्रीमेह्श्रीखलसाअन्तगवचन
यास्वामिह्याउाअूत्लक४र्म्मकथाअादिपन्ःअूजगपूनोलयागुःव्याबा
नयाकस्र्ध्वसपान्ःलमस्त्रयाक्वचनयानाज्ञाध्व्धह्नेसत्त्ववचनह्को २१
ज्ञानाउाविस्कक्वअूसत्स्वचनमज्ञाकस्रःह्नेभेगृकवृलामह्दिनाउ:
पञाध्वाकपमायागुमलुउपदत्वविस्यधानस्रथ्धिंलकथ्वविज्ञायम

।। २ ।। अूवेवर्ह्लिकाह्मागामी.स्वज्ञप्रत्युकनायकः४।।नानानिर्यान
निर्याका.महाह्केककात्रगः४।।ह्र्नंगार्थिंलस्वेध्वकमेंह्श्रीयाखकखल
साह्लकाकोःस्नुमाहृ.निमाकाहमह.पञ्चस्नासमस्त्यीनायकम्स४।।श्री
वकप्रत्युकःमहायानःध्वकआदिपनेअूल्यानिर्यानदुगुवचनः।ध्वपृ
थिवीक्रापतेजवायु.अूकासमेअूःखालनें.पीवह्तेअूल्यायाक.सत्वध्व

।। १० ।। अर्हन्तो भगवन्तो वाहि स्तवेन त्वा लोके जितेन्द्रिय ।। क्रमप्राप्ता एव य-
प्राप्त. श्री सिद्ध नाथ सर्व्व विवर्ध ।। हतेजोलि हं नया. प्रथ पहि स्तु या. अप्राय-
वी हनाग [illegible] स यानल वलन पुत्र. धीब ढुं डीथा उ पल पुत्र समर्थ २६
हा उपाय माक पदनाक. पथा कस्य याम हयेम व्याव भ ध्वस्याल ।।
११ ।। विद्यावरंगसेयन्त्र सूनगपाश कविल्प ४ ।। निर्घ्ृ मानिवर्हकाय

सद्ध्यनयसि त ४ ।। हनेगथिं नप्र ध्वप्रमेह श्री वकवाल सालतें क
सास्रु सद्वलनपाउ विघ्न कप्र. सगाक धायतवाग ग याग. मथसेवानक्र
धलाक याकानन स. सल प्राणी सम स. याग. चव नहूल साल मद नाक्व
नमड अर्हन्का ल घयागुसे मड महाकामलमस्वदं गल स्वानक्र ।। १२
।। सं साल पाव कोटि स्व. कृ नकृत स्कब स्कि न ४ ।। फैवव हानि नि स्क नप्र

ह्मा सम्हा विद्याव ॥४॥ हनेध्वसं सालपाल याना उम्वो नायाय मालध्वक पद्ध
र्थ्याना. नाना तुथा सनाय थाके. जनुल व ह्मानमा कुपद विउ ख्क थ्व ज्ञ ह्म
नमाव ह्म ख्रीमी ह ख्री ले हल ध्व साम्ह यार्द ज्ञन ॥४॥ २३ ॥ सर्वधर्म्मा धर्म्म २९
नाहाग्थानु. लोकालोक ४ कनेपव ४ ॥ धल थ्वया धर्म्म नाउा. थ्वया मा र्ग्म
पद्धतक ४ ॥ हनेना थिंनगु थ्व ज्ञ ह्मान हु ख्क म थ्व मन ह्म ह्मनयाना उा ह्या

उाम्हहाहऊ ओ क गापिं नय्र थल सा ध्वमनऊ यासिद्ध्वायाद थ्वस. हाकू रु
रथे. उ कि सवान ख्र पवन सवनध्व समह यीं नायक. ख्र ४ थ्वअवक प्र यक
मलायानम. महल्ला तेक्न विख्र नाउा ज्ञन्य कानीह याना उा. उ थम
लेथ्वप. थ्वो ल्लाप कर्त वा ख्र ज्ञा का ह्म. थेव हक ज्ञात्मा याक सय थ्व ऊ
याउा विख्र ान ॥ १८ ॥ सिद्धार्थ सिद्धि सं कल्प. सर्व संकल्प वर्द्धि न ४ ॥ सि

विकल्पाऊपा अतु॰धर्म्मयाअतु पनावाय॥ हनं समस्त अर्थसिद्धि याक
स्तकन्ह॰याका मङ्गलस्वयाक ॰ना विमू याउ विकाबल कल्पम का॥
लकुआविक मदू सायामदू॰साये द धर्म्मयातु याका लन सम समन्व
लसायमदूक॥ १७॥ पूर्ध्वे वान पूर्ध्वे सेलावा॰ह्लनह्लाना कलम ३०
हकू॥ ह्लानवीसन्द णगह्लानी॰सेरान ह्वेयसेहकेत॥ गर्धिनस्र धर्मेह

श्रीनाथक बालसाम ह्ला पूर्स्वसीन॰मनागुनलयाकस्त्र पूर्ष्व साहाव॰म
हाह्ला नवीन हह्लन ब्रायनपु थासद्व दइडाथ हनेधीन्वलनदुवनमदू
पनमार्थ ह्ला नस्थालि नान इवरिसि डाथ धपेइध सेलालह्ला नसे हालध
विना पनमार्थ नऊाना कथाप्रच्छ॥ १८॥ साश्व नाविश्व वाष्यागी
अनी ध्वस्यायीर्यीपकि॥ प्रह्लास्त वधाहन्वन॰पद्मसाद्य स्थिया यद्द

कू॥ पनाधिंन क्क मेंह् थी धक आलम्ह ग यालमेंह्यमह् क्ष:मा कू याथ्य
नसम स्थ्य थ सें साल न्ह्या ना यक स्क: थ्यो ग ह्य कि नें सें पेंन थ्य य:ना चिंन गुथ्य
नयाय क्र ग ह्य ल क्रो ह्य थक अल स: म हा दु थिपु कासया:ना उ. समस्कः आ
ह्य न सें प क ह्य उ क ल थ्यल सेंन्ह नप या प म ह्य उ ह्य या सि नें क्व दि सें क्र
सेव प. पूथ्य यागुसनिलह्यनयागुसविल. धर्म्म यागुसवील. धस्वकाव ल ३१

नपूम्ह उह्ल मक्ष प मेंह् श्रेष्ठय क्षथक्ष॥ १० ॥ पंचकायात्मको
वुद्ध. पंचज्ञानात्मको विह्व ४॥ पंचवुद्धासमक्द ८. पंचचक्षुव
सेंगध्वकू॥ ह्नै प पू थ्य या सवील. क्वादिनें छागुलिमविलव
लनपू यच्वा ह्यनथ्य य छ पा ह्य विह्यनसवील सें सें ह्य क. ह्य नुपेंचक
थ्यागक या गु म कू न न पू पा उ छ क्ष कथा ग क्ष या उ:ह्न नें छागु

लिवक्रूश्रयसिखाकनाठाखवलपाठाविक्रूर्मे ॥ १८ ॥ ऊतक
सर्वेवज्ञानीःवुद्धपूरूपवावब॥ प्रह्नाहवाहूहवाथानिःवर्म्मया
निहवामक्कृहू ॥ ह्नीगाथिंनक्क मेंह्श्रीवाचकश्रलसास्तमक्क ३२
थ्वकथागाकयावेवृह्याठासमस्कावड्डपर्व्वेवङ्गापलेपृयकप्र
ह्नाथायह्नानथ्यह्नानश्चे स्यानिःथानवर्म्मयाङ्गाकयाःपानह

ह्मर्सेःथ्वमेंसाःनयाकह्यमान्वक्रूश्र ॥ १९ ॥ घनेकसागावक्काह्साःह
थाङ्गाकाङ्गनास्यकि ागाहृयमहू कवश्वयीहःप्रह्नाह्नानावलामहाहू
॥ ह्नीगाथिंनस्थ्वक्क्मेंह्श्रीवाचकश्चल साःसमर्केघनयाहालसा
काहवङ्गयाम्वपगुसवीलक्क्ःथमथ्वथमेतेङ्गायनवपक्क्ःथ्वह्लानः
प्यागुङ्गानिथ्वेहनक्कथ्वक्कमेंहश्रीहव ॥ २० ॥ वेवान्वनामहादी

ध्कि·ह्मनऊा नि विश्वव्वनथ ॥ अनादि दीपा ह्माना क्ता· महा अऊा प्रह्म व्व
न्वा ॥ धाथ्विन म्ह मेहृ श्री भवसा श्री वे आव्वन थ्विनस· महा अऊ वकम
धह्मनया ऊा नि प्त थ्व म्ह येना व्वनहृलसानथ्व ऊा ा म सेसान याम थ्व
डागुम ऊ प्रकास या स्या विश्वा· कम्ह धडा गुणऊ माथ्व प्रकास याना ऊा
ऊालमा लया स्या विश्वाकम्ह श्री मेहृ श्री थ्व का ॥ २१ ॥ विद्याराजो ग्रम ३२

मन्त्रेशो मन्त्रनाऊा महार्थकृत ॥ महाश्री पारमाश्रीधा· विश्वदर्शि
विपर्य्यति ॥ ना थ्विन म्ह मेहृ श्री नाथ क थाल सा दया विद्या याना ऊा
लेहृ याउ विद्या कम्ह·ह नैरु न्या गमे ग्र याना ऊा लेहृ याउ विद्याक
म्ह हलेमहस्व कुव हिहृ याउ व्व कया अ दहम स्वा मिहृ याउ लेप
नया हाव डुर्म्न याव कहृ याउ विद्याकम्ह ॥ २२ ॥ सर्व्वत्रालम्ब

क्रम्पुं.ऊगादानन्दनोवन४॥विस्वव्रपीवि ध्यनाव.पुष्कामाव्याम हाप्रघि॥ ३४

हनैगापिंनध्रमैहृथीनाधकआलसा.समर्स्कं ध्वकृध्यगाकया हूऊंछव्

ड्ड्षर्मधं घम्पाहूऊछ्वाद्ध्वऊगोकसैसाबैयावव्हयाऊज्ञानन्द्या

कागुमिस्वा ध्वसमसकृयोदवकाऱ्यापुस्तवृपध्वसमसैध्वसीलालदय

कूसहनैगाथिंनक्रआलसासमसकृदवनामनृध्वेध्वज्ञादिपिनैपक्रा

यानाऊज्ञादनतावमीन्यपाकक्रपथिंनलध्वसयावहलं॥ भ्रवु

॥कूलहृपयत्रोमर्न्छिं.महासमयवत्स्वकृ॥ वत्सगृयधव४ध्यसृ

हियालोहमदगकव॥ हनैगाथिंलक्रनैहृथीवाधानसामहाविप्या

याधालज्ञादीनै.स्वगुलिकलयवलमैस्वाछमहासमयत्वक्रयथंनैपु

लवृप.वऊक्रापदनै.स्वगुलीवाउवलयवमिस्हनैश्रावकप्रदृकम

हायानस्वयाउपदमविजाक्र॰थथिंनगुउत्पत्तियागुथ्मन॥ २६ ॥
ॐमोघपाशवज्रिणी॰वज्रपाश्मनमहाग्रहत्व विजोकुस महायाश
वज्रहेलवलीकलश॥ थ्वथिंनक्षपक्वमेहश्रीखावसानुमोघपाश ३७
लोक्तलयावमहाउपहर्लुइरगोफहतेनवग्रहश्रादिपनेथ्ववजपाश
निरिश्वस्वधनयायरुअक्ष॰वज्रयाश्रीकुस॰सिधवयायासधवलपु

घथिंनक्षमहाङ्क्षधावमर्हिफ्केववज्रादिनैमहाहयविजाक्रथ्व
सयानहूवै॥ २७ ॥ गुविशुद्धधर्म्मधातुस्थानगतथ्वपंचविंजागि
॥ थ्वकिनिर्म्मलधर्म्मधातुयागुघनीयहापगुथ्वश्लोकहूव॥
॥ २८ ॥ ॐ काश्वनाहृघक्षश्वालीमः॰ह्वकनक्राह्वहृहृजावलिश॥ हृह्व
कलांलकंकालाः॰हनाहवगमानलश॥ हनैक्रार्धयानाजात्वेथ्वसपाव

थ्वया पुण्यन त्रयपुयाक थुव दुअकूलया॰ मिश्वा॰ थुकाया हाकः महाबल
डाक् भ्रकौ कालमद बृकि हनं हनं हनाहलथ्वयाम्रः सकछिपाकङ्गालनं सी
हूकं हूंडाक् ॥ १ ॥ थ्वमाक्कौ विघ्नराज॰ वगव अहयकलथा वि ३९
घ्नस्त्वज्रोहवज्र॰ माया वज्रो महादेव ॥ हनं धर्म्म यात्राजायाक विघ्
याड़ समपनयाया हनं डाक् वज्रयाक्षणनं॰ गाथिं मगुमहावज्रयाथ्वया गाडौं

कृताथक थ्व वमा लमहा हतयो नक क्रवज्रबल॰ वपूक्रमालसाप उाहू
दय श्रापनराव लेसै थ्व वज्रथल नपाउ मायाच क्रूसैवज्र महाथ्वया
वंकफउाव लक्र ॥ २ ॥ कूलि गथ्व वज्रगानि॰ वज्रमन्दावलाप
म ॥ कुच लेकज्रनादापा॰ गजेन्द्र मापनाकें हूकू ॥ हावज्रपालि
याप्रथमसेउत हिक्कन॰ वज्रगहडाकावनपिनक्रळे उनगव

ड्यथनलपक्र्याःनाथिंनगुमर्हित्याखलसाःनवथायमनूऽया
गुऋगुनिर्हिःमियागुद्गुलिनद्याउम्वोनक्रष्वमपाव॥ ३॥
हाहाकाश्रमहाघाम्रःहीहीकात्रहयानयाय४॥ ॐहहाःभमहाः ३१
हाःभाःवज्रहाःभाःमहाबव४॥ हावज्रथिंनक्रमर्हिक्रःहाहाः
कानगुडद्नैहीहीकालमाद्नेयानाउम्वानक्रथ्वोनिमिर्हि

नक्रनिर्हि हयीकलखोनक्रःप्थिंनक्रउऽगुमाद्स्वनद्याउऽ
ककर्हि ह्याउम्वा नक्रःस्वन॥ ५॥ वज्रसत्वामहासत्व.वज्रम्राज्ञाम
हाहूस्व४॥ वज्रचन्द्रमहामाधाःवज्रहूंकानहूंफट्दि॥ हनैमथिंनक्रमै
हश्रीनाथलसामेहश्रीयागुःनूपवज्रयामर्हिवज्रसत्वनैमहाउविल
यानाउःप्वज्रयाकहूंश्वनःसहज्ञानन्दह्लानयोनेसहस्वःवज्रयामिहस्

म्निकयीनक॰ पनमस्त्रेष्टॐ कालखायगुविङ्गाकुलमन्त्रनजाकहलवा
७ ॥ वज्रवालायूथवज्री॰ वज्रखड्गोनिष्कन्तनं४॥ विश्ववज्रधवादङ्गि॰ त्र
कवज्रिवधीकहं४॥ गथिनक्ष्र वज्रवलपाउश्वानक्ष॰ वज्रवानथ्यागु ३८
ज्ञनिवलवाकक्ष्मने॰ खवज्रज्ञानाउश्वानक्षे॰ थिश्ववज्रखवलपाउश्वान
क्ष॰ स्युलिवज्रनेमसमक्षकुयाक्षजवलपाउश्वानक्षथथिनक्षवज्रय

त्रलेष्ट्व॥ ८ ॥ वज्रकालाकवालाज्ञा॰ वज्रकालाभिमानूहं४॥ वज्रोवस
महावस॰ गगाज्ञोवज्रवोधनं४॥ गथिनक्ष॰ सल्लिवज्रधानसावज्रवाङ्गे
इनगुकजुश्वलमिवाज्ञानसवज्रमङ्गवीक्ष्मश्वानक्ष॰ थाकह्रिदलमिव
थूङाक्ष थथिनक्ष॰ उकुमगुमे [illegible] ॥ ९ ॥ वज्रलामाकूलनन॰ वज्रवा
सेकविग्रहं४॥ वज्रकाटिनखालक्षा॰ वज्रमानखानक्षवि॥ गथिनक्षथवज्र

नेउत्यफिहउाग्रुमचिलनाबवसा.प्वयागुमहिनवज्रथिम्ह.प्वयाचि
मिसप्वालने.कोटिशप्रमाननेद्वज्रउाउाध्येवम्हयाद्रूपेवज्रयानायक
उप्येगुकऊउाकमहावलउाकप्रविलम्ह॥ ० ॥ वज्रमात्रायनमः श्रीमा ३९
न्.वज्राहनमहर्षिकः॥ हाहाहाओनिर्घोषा.वज्रघोषस्वरूतनमः॥ हने
गथिनगुमहिप्वमपावयावलसा.आहवनकिसाहलसानवज्रयागु

मालान.वज्रह्नवनेम्हयवज्रसेहकाकियाउाम्हहायालाउाविघ्नक
म्ह.होहकालसेवनेप्वह [illegible] सेहकायाल
उाविघ्नकम्ह॥ ० ॥ मेहघाघामहानादम्भेगावयालघामहान् उाक
शयउपर्यकाः घाघोघाघवनान्वनमः॥ हनेमेरुघाघमहानादबाय
हलम्हगुवनन हडउुयघाद्यगुहलाम्हनाहलम्हगु.ध्वसघालम्हयागुः॥

द्धप्रेलोक्यनकायहृदनैत्राकासपर्य्यन्तैं। येनगुनाकृथयिंनगुना
द्दनैसेहृकूक्तडाम॥ १० ॥ ज्ञानदर्शनहानमाभ्यपादनमोऽर्हदश४॥ ये
िज्ञादर्शनहानयागुणमथा त्रिपुष्णक॥ ॐ ॥ ॥ कृथकारुहृत्तै ४०
यत्स्यहृनकानिनर्दक्व४॥ शुन्यतावादिवृषभ। गम्भीरोदारगर्जितः
४॥ पुनर्वात्रगाथिंनस्पृत्रुखध्वसपाल्यावसा। कथागाथयाहृानने।

समस्कैसेप्राणीवायष्वप्रानिदको। ज्ञसैःखयाफसैकात्वयानाउ। ज्ञावव्र
नैसैकौसैकेसक्रिडा। शुन्यताबादनयू। महागम्भीली। थाहगाहामहूषथ
स्ज्ञकिहृउधनस्पृवृषध्वम॥ १ ॥ धर्म्मशंखमहानादा। धर्म्मगण्डि
महारवा४॥ अप्रतिष्ठितनिर्व्वाणा। दशदिग्धर्म्मदुन्दुभि४॥ हृनेगाथिंन
स्पृध्वस्मेहृप्रीनाबालसात्वयामा। वृतृ। समस्तलोकयाकं। मीगलकृउ

ञ्च पथिंनम्ह यर्म्मो मन्त्रिश्च य. गी सिद्धयाया उा. वाजन पाकएुवाद नेथ्व द
सद्दि गाह्वनप र्ध्य फ. वसमप म्ह ह मेद्द वलाकयार्क माञ्ज. ब्बकञ्च. पथि
नम्ह नेथ्व लाकयाकउ पेद्दमे वियाउा विश्काक ञ्च थ्वसपाल॥ २ ४१
॥ जूनू पावपवाच्व एक्र. नानानूपी मनामय। सर्व्वेनू पावनास्त शुं व गो
चपफि विम्ब श्रुकू॥ ञ्चा. पथिंनम्ह मेह्श्री ञ्चालसानूपमइम्ह ञ्चा वाले

मेह्म्ह समस. थ्वीलपर्गा ञ्चा दिने सर्व्वसत्व प्राणिगनपनिथ्वनूपद्दउा पि
ती. थ्व थर्म्म थ्वलवपू. सवाव सेसानया. नूपाएथ्व कपावञ्ज एथ्वेंबान म्ह
॥ ३ ॥ जूप्रत्वेकाम हेसा क्राक्षे थान्कुकमहस्वदश सम्भूञ्कू कार्य्यमार्गनिह्लु
धर्म्म कञ्जमहादयथ॥ गथिंनम्ह मेह्श्री नायक वासुसा. नोहाकीनञा
नाने ञाहमकिउा ञ्च. वह्म ञ्चा दिने थ्वति हवनया ञ्चलेलइपा उा.उ

कृ म गु धर्म्म या मार्गा ध्व ध क हा स्व्वा न स श्री मे ह ग्री ह ल ॥ ४ ॥
त्रै लोके क क्र मा ला ग स्छ विर्ना व ङ्ग प्र क्रा प नि४ ॥ ध्वा ग्रिं म ल क्र म व व
क्रा के त्रै ली क स न्द न ४ ॥ ग थिं न स्व ध मे ह ग्री या गु स्व ल प ना ध न ४२
ला ध्व स र्ल मं ध्व या का ल सैं वा ध स्व. ध स या व ह नैं ध्व स पा ल गा थिं न
क्ष. व ल ला स या मी नी. क्ष थ वी ल ह उ क्ष स या ति नी. ख्व स क ह पा ओ क

म स. यी स्वा मि ह या ओ ध ल न प क्षु. ग थिं न स प न मि स्व ल ध्व ल ला स
यानि का व ह न नैं मैं ह कु नैं सैं पुर्ष्ठ ह ओ क्ष ध्व त्रै लोक स ध्व सैं सा ल स
थैं हिन्वि म क न कैं विध्व व क्रं थिं नि ध्व हैं व न क्ष भैं व क्ष हैं मे ड ॥
ॐ ॥ लो क हा न गु णा च्वा र्य्या लो का न्वा र्य्या वि मा न द ४ ॥ ना थ स्त्रा का त्रै
लो का प. मा न ह्मी का यि वृ ल न ४ ॥ ला व ङ्ग या मि स म स ध्व लो क हैं. म व

क्ष त्स म इ ह्या लिष्ठ समस्त लोकया. गुनयाङ्ग कार्य. समस्तया गुन्ह ले ह्या
उ थ्व थ्व लोकया म्वाकूल ह्याया उ. स्नन ह्या यानक ल्यालयाक म्ह थ्व सपाल ल
क मवलयाकक याकमा कू प्रापि ह्युया उ॥ ३ ॥ गवानाहागासे होग. सर्वह ४३
ह्यानसागान ४॥ कू विघ्यान्दको सेकल्ह् कू वपेउलदावंसं ॥ ह्नेगाथिनम्ह
मेह्रू श्री चक्रवालसागागान्नाहागाभयज्ञाकासत्स ध्यनमपे विष्कयक्ष स

कूपाश्रीगाकयानाउा कूहूयाह्यानयागुसावालक्षयसमूइथे. कू ह्यान
ह्यानाने. कूउयाकूगालसेमान कू म्ह थ्व सेसानयाथे कउल धरवगुम्ह
कम्हगाथिनम्हथ्व पेकउ. नभालसालफिकयेकह्याने ह्यानाकूगुथ्व॥
३ ॥ समिकाणापर्स कूगसेसावार्धंवपानयाय४॥ ह्यानाहिष्यवकमकू
दा. सम्य कू वकूरतव मे४॥ थिनम्हमेह्रू श्री चक्रवालसा समस्त इष्ठवमे

हस्यचयाना ॐ॰ मान्वकृक्ष॰ थ्वसंसात्वपाखुन्वागयाना॰ माहस्मत्रावकृथेंथा
सपानहुनाउत्यहिइ ॐ ग्रमकस्कनपूयाॐ॰ लाहननलीकिस्यविद्याकेग्र
थ्वसपाव॥ ८ ॥ ग्निइश्वनइइवसमगाद्य॰ साकेनकत्रिमद्किगाउ॥ स ४४
र्ववलनविनिर्मुक्तज्ञाकाशसमकीगमइ॥ गर्थिनकर्मीइश्रीधर्मम
हलाकुकानेनकथायं॰ त्रिमूर्हि॰ कायवाक्वविलथ्वसुकाननसंपर्क्षइ

याॐउत्यहिइ ॐ गु॰ पाय्वनिमनयाना ॐ भान्वकृक्ष न्हनेकन्कसइ४
थ्वथ्वकुमोन्वकलश्रह्लानदकाकूलुयाना ॐ भान्वकृपायनाया
कृथ्वसंसानसकूनैरुहुमदयकेथेंथ्वमदयकंसाश्रीकेपुन्नेकृश्रा
साश्रुइलै॥ ९ ॥ सर्वज्ञंगमलाकीकः॰ ष्युज्ञानखगकिंगाकइ॥ सर्ववस
त्वमहान्वाएत॰ गुद्यारम्यघनरोधनइ॥ गर्थिनक्षथ्वमेइश्रीबाबसा

समस्तपापनीमाकपस्यंमहापुरुषद्दुन्दुनयाककाउगापिंनसअवक
प्रभृक्रमहायानध्वनमहायानसत्वबनपकृष्ण विसंविद्याकम
समस्तल्लकयाकउठमपुरुतमसंपवलवक्षध्वसयावसमसहाउनया ४ग
वासमनिकसध्वसपालं॥ १० ॥ सर्वापविविनिर्मुक्तः व्यामवत्सह
स्थितः ॥ महाविकामसिमबः ॥ सर्वबलोलमाविहतः ॥ गोधिनसमैसृ

वाथलताध्वसेस्मरयाःकुर्हिकुकार्यायापतु.सायाक्षादिनकालकाउ
विद्याकमसदासर्वं था ईं ज्ञाकासलपनं विष्णुधाध्व ह्ननं ध्वकःम
नीकवलबलबपहमनं या नक्षयासिनैउहमण्डवत्वव्यापिकह
लक्ष्मसंसोषी ॥ ११ ॥ महाकल्याणबुद्धीकाःमहाहृदयकाट
मं ॥ सर्वसत्वार्थक्षलर्षोहितैषीसत्ववत्सलवः ॥ गधिनसमैद

श्रीनावकख्मलसमहाथलेनावकक्ष्मःमहाकःडांमागुकलख्वक्तःसि
मास्वब्यपक्ष्मथलथ्यमानाडांविक्ष्वाधक्ष्मःनंवनीक्ष्मानामयाउघटथे
उपमाहाहुव.ध्वसम्मक्ष्वातिउथ्यनियाकक्ष्मःध्वसमसप्रातीयस ४६
मसद्वासवकालसं केल्यानयाकक्ष्मःसख्वयाकक्ष्मध्वकिडोगंनुया
कं श्रीमिकवनावोडाक्ष्मथ्वसपाल॥ १२ ॥गुलागुहहकालहल

मयहसनयविहू४॥सख्वन्ध्रियहाव्यलहः विमकिद्रयका
विद४॥हलेगथिनक्ष्मःमेहश्रीगाथवाथवसाहेनैमकोनकालसिड
क्ष्मकेसमयामकुथ्ययामत्वसिडाक्ष्मःखलवसिडासमयेगुहपथिवि
श्यान्ह्रय॥समसप्रात्वायथ्यागुरव॥दमवडान्ह्रिय.थाकानथोसिडाब्र
समसकमाहिमानिवियहध्वसपाव॥ ९३ ॥गुनीगुमहवर्म्महःप्र

शाग्रो महोदय ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यः कीर्त्तिर्लक्ष्मीर्यशःशुभः ॥ हनेसम
सपुनमिडाम्ह समस्त धर्मेमिडाक्ष पुद्दीश्रमेताल्वइलक्ष समन्तमू
किमःरीमेगालस्वलपम्ह हनेमहाज्ञिस्वबपक्ष श्रुकवल्यानडाक्ष ४१
क्ष धामसपान ॥ १८ ॥ महात्मवा महाखासाः महामञ्जु महानिधि ॥ सकु
कादः सत्त्वाधिहृतिप्रमादःश्रीर्गीठाश्रयति ॥ हनेमहाकडाबन महाउत्ता

हसपन्नइयाडामहाज्ञानन्द्रडाक महासेवेनेविक्षाकम्ब ज्ञानन्द्रइ
डाक्षमहाउहपडाक्षधामसपान ॥ १४ ॥ वज्रध्याववज्रदः श्रेष्ठः श्री
वज्रध्यमवज्रध्याहमः ॥ महाहयाविपुवलानिवाषरूयनास्तनः ॥ हने
गार्थिनक्ष मेहश्रीनामकमाल्लसासमस्त यानवलक्षानविडाम्ह नहा
वियाकुननयायाडाधर्मे समस्त यासवनगतिस्थनसमस्तनाकु

माखकाउबानध्र.समस्नयामवनउानउाल्गिउाम्र॥ १३ ॥ गिहिविभिष
घुऊकिला.उटिभोघु किलीहिंमी॥ पंचाननपेंवभीष.पंन्चविल्बाणद्व
वेश॥ गापिंनक्षधमेंहश्रीयाकसबनउानाउाखलयानाउा.उमादयाउास ४९
लायउानया.किविन्हिनैपुयागापिंम्न.ह्नेह्लपानल्लावदयाउंवानक्ष.
ल्याउुविवक्षुम्रायह्लापाकम्नु.ह्नुयउान्नुल्याउम्याम्नुउाउं.ध्वकलवलव

नविस्यकम्नश्रीमहश्री॥ १८ ॥ महावुर्हुयनाभोउिं.व्रम्नवालिव्र
कालमथ॥ महाकयाकयालिष्ठ.ह्नाकवालभेहुनाइय्रधीय॥ हावजया
गिगापिंनम्न.ध्वनागीस्कनावयाम्नने.महामहाकउावर्म्मेसचन
लायम्नमहश्रीनें.भखनासैवैनवयाउु.व्रम्नन्वर्थीयानाउावर्मेव
याउायाकम्नकुन्हियक्रियलपेंविस्कवकत्वैहुलल.कउाउ्नवनपुसलव

साहायहनेजाकियाचर्म्मचर्ल्लुमलपूक्त ध्यमथयावाधिसत्वप
डाकष्वसेयान ॥ १८ ॥ ब्रह्म विद्[illegible]ज्ञाे ब्रह्मा ब्रह्म निर्वाणमाप्नुया
त् मुक्तिमाजा विमाज्ञी एषः विमुक्तिसाक वाथिव ४॥ गथिंनम[illegible]
र्षानसाव्रमहानसउा[illegible]नयावपक्षः षवरपाउब्रीमन ४९
तेकुयाउहनेथुनासाकुया निर्वान पदनाक[illegible]माकुमातिवलदा:

काहयाउ. समक्षष्वसेसानया वचनमाक्तिनयानाउ विध्याकप्त ञ्
किसान्कनूपका मनस्मील कवने[illegible]नमंगलयाक[illegible]श्रीमंहश्री:
हल ॥ १९ ॥ निर्व्वाणनिर्हेती साक्षि[illegible]याः निर्व्वाणमन. क. ४ ॥ सफ्वद्
४ स्वानकक्र तिस्क. वेवाघमपयीक्र्य ॥ [illegible]तिम मंहश्री[illegible]बसानि:
र्वानसमा ख्रियाकक्षमहाआना[illegible]बनूपर[illegible]स्वानम मंगलयदार्थ

इहस्व सु स्व का लका ऊ वेरा गि थुलव पाऊ न्वा न स्म. जप स्या हुर्दे थव लव पाऊ
गुहास विश्व क स्मश्री ब्रह्म मूर्हिं मे हुरश्री ॥ २० ॥ गुह्य पाद्यस्तु च माद्य कादि
नाला ग्रा निर्लेजन४ निष्कल सर्व्वगम व्यापि. सूक्ष्म बीजमनाश्रव ॥ हनैं ३०
थिनस्म मे हुरश्री वाल्क थालसा सनाने ऊयन थथा प मिन्त्व थ थ्या थ मदस्म
महाव्याकुल व्हि हृ. थ थ्य हृ हृ ग्र थ हृ हृ व कैं ड प मा न का थ्य मकिऊ घ. व

कृ. था ना मा थ म किऊ स्म. ज्ञाकान मड स्म. मूर्हिं नमड स्म. सा क्रा कृ. निलैं
ऊन स्म स्वैं. म मस्क क्रिडम ऊन्कृ याक व्याधृ नपाऊ स स्क्रा. गुबे पया नाऊ थ्य
सैसाल दु यकं या कृ न्हू पस्व वू प हृ याऊ विस्म कम्ब्रु स्वमपाने ॥ २१ ॥
मूवगा विम्बो. वा न्कृ दा षा निरामय ॥ स प्रवृद्धो विवृद्धात्मा. सर्व हृ४ स
र्व्वित्यन४ ॥ हनैं. थिं नस्म मैं हुश्री थक थालसा. वऊ गुन मड. निर्म्मल

ह्रउ॰ पापन लिर्ह्म ह्रउ॰ हनीगाथिं गुज्ञनगादाङवनेकावकाउआवान ग्

वालसा॰ व्याघिनिमदूम्ब विनी॰ मनिवक्व विक्रूह्र याउ॰ रुगवज्ञास्माम्ब

य॰ रुरुरुयमदूम्ब थं॰ थ्य रुरुविथ्यवर्हमानमभिउगम्ब थ्वसपाले॥ ञ१

२२ ॥ विशुद्धधर्म्मतामीशा॰ ज्ञानमद्वयरूपधृक् ॥ निर्विकल्पो निरा:

भोगः॰ त्रिधा बुद्धकार्य्यकृत्॥ गाथिनग्व उग्रमानहीनवा वालसाश्रीवे

नालाज्ञज्ञानधर्म्मकावकाउ॰ सुद्धधर्म्मधनलपाउआवानम्ब॰ निर्विकल

प निराकाराक्षय॰ मानविलयाविकल्पकावकाउआवानम्ब वुद्धयागु

कार्य्यस॰ वुद्धया त्रिकायक्षय॰ क्रिमलवकोलनावयाकम्ब॥ २३ ॥ अ

नादीनीधनो बुद्ध आदिबुद्धो निरन्वयः॥ ज्ञानैकचक्षुरमलो॰ ज्ञान

मूर्त्तिस्तथागतः॥ हेवरुयाभिध्वगाथिनम्ब मेह्रश्रीनावालसाज्ञन

छिवड्ढयाथाधिसत्वयाह्लानकनाउञ्जनादिनवुड्ढयाउह्नमगुमारु
ल्कन्दपापनशिपुमन्दयकै।नाथिसल्ह्लानहृष्ठिनेस्वयाउम्वोननायक
निर्म्मलगुनवृद्धअययमिवाकनाउ।ह्लानमहिंस्वनुपगुसनीलमिश्वाय ४२
वलपाउम्वाने ॥ २४ ॥ वागीश्वनोमहावाधी।वादियाट्वादिपंगावश
वदनौवयावलिल्हा।वादिसिंहापवाडिनथ॥ नाथिनवध्यवागीश्वन

नखावसा।समस्कवचनया।साम्भुयाखामिष्ठ्याउ।समस्तसूयखका
हिदवलोकयाकहोकयायरूउक्कमहासामं ध्वन्हुसाययेगुदिसिव
ञ्वनसउजाते ह्रयाउम्वानयन्ककिवलवोवाञ्चकुनेगामहापविकिउ
ल्हमाश्वसूक्ष्मपवस्व।ज्ञकिवाननाककिंसिंहहावागुणदनेध्वऊंकुगानप
निसकालेहानाउ।विस्युउानथ्ये।समस्तगृह्रऊयनपाउविद्याकमथ

सपात॥ २७ ॥ समस्त दुर्गति प्रशमाय. स्वाहा। माली सूद गं ते ४ ॥ श्रीव
त्स ४ त्त पुष्प दीपं. लाला स्त्रन कलशपूजा दिवा॥ गाथिं नेस्व मेहरू श्रीनाथक
श्रीलसा समस्त प्राणि गतन याकउ हिरवनाउ महाकरुआ स्वउ स्वमसी
यनापीहि हछउ श्री बहुयाउ स्वितं नेखल समान हयाउ श्री लक्ष्मी प्रका
सहउ। थेमहा कडम्बोहूयाउ विष्णुक्रम॥ २८ ॥ महाकीय प्रव ७३

४ स्तस्य. शल्य हर्दे निवृत्त ४॥ ज्ञनोप बके स्वस्थ मन. ॐ मवाधिम
हाशि पूः ४ ॥ कोवुकपा निध्वगाथिं नेस्व मेहरू श्री धकश्रीलसा समस्त प
सैसानयाम होवे प्रगाथीं दुष्ट सं श्रावयाव वैद्याकपनी कउ। थ्येवाते पू
किसयाका कयाउ न्वानस्याक. मोव रु एपेडु दस्व दकोमान्वकृस्य ग
थिंनेस्व मेहरू श्री नाश्रीलसा. पापव्याधि महाव्याग्र प्रहीं नि नकुस्वनाथ

सैसालया इ इस्व हानओ ग्रामियावागाभावक क्ष ञा स ल सिमा ल्थे ध्वक
श्रीमैइ श्रीइल ॥ २० ॥ प्रैलक्ष्य मिलकैत्रा क्ता श्रीमानूकृइमहुल ४
दश्चदिग्याभपर्ज्यन्ता. धर्म्मध्वेक महाकूय ४॥ इनै प्रैलाक्ष सस्त्र हूति
ध्वलनकीना कयाल्थेन क्रुग्र महुल लविक्षाक क्ष. दशदिगस्तपर्ज्यन्क.
न्नाकोस लै धर्म्मसै ध्वल्थे त्राजाओ सौविक्षाक क्ष श्रीमैइ श्रीत्वैइल ॥ ७४

२९ ॥ क्रगाक्षु इक विपद्योमैश्रिक व्रुगमसुल ४॥ पद्मनर्ह्मवब ४
श्रीमानू. वत्वक्ष ग्रामहाविह ४॥ इलै ध्वक्ष मैइ श्रीइलसानै ध्वत्रा
नसैसाल सक्षुग्र शक्ष्या याल्थे लुक्षुमै श्रिकवूगाया धास. श्रीत्रैहक्ष
वह यके पक्षनूल स्वनसानूघ ध्वलन पाडा विक्ष कक्षनै वत्वनैय
विकयानाल्थे ध्वमैसान ससैइ कयाक क्षध्वसपाल ॥ २९ ॥

सर्व्वबुद्धमहायाज्ञा॰सर्व्वबुद्धज्ञानमहावज्रहूं॥सर्व्वबुद्धमहायाग॰सर्व्वबु
द्धैकसासन४॥ गथिंनङ्गमैहश्री चकसंवलसामसमस्त वज्रयानक्रलोक
हावज्रमसल वज्रयासासनल॰महायानर्व्वथांथवल पाउँविक्षकक्ष
थसपालहलं॥ ३०॥ वज्रनवलाहि थक४श्री॰सर्व्वनवाथिपन्वव४ ३७
॥सर्व्वलोकन्वव४पक्रि॰सर्व्वबुद्धसवनस्वकि॥ हनेगथिंनङ्गमैहश्री

लोचक बलसा श्रीवज्रसत्वया गुरू हि थ्यकनाकक्ष॥ हनेगथिंनङ्ग
मैहश्री॰श्रीश्रय क्र णिस्वहावनेसेहकाउँडाक्ष॰हनेवज्रधर्म्मसंघय
गुश्री छिनल दवनायायाकूस्वनक्ष॰हनेगथिंनङ्ग थवसा दालक्षिंक्ष
लोकन्वव योज्ञ थिपणिक्ष क्रैनन वज्रवलय ज्ञथिपकिक्ष थसपा
ल॥ ३१॥ सर्व्वबुद्धमहाविहार॰सर्व्वबुद्धमनागक्रि॥सर्व्वबुद्धमह

काय॰सर्ब्ब वज्र सत्व स्वाहा॥ गथिं तक्व ध्यमं ह्रुं श्रीत्रा मब्रसा सम्नल्हैव
ह्नयाब्वीहु सम सत्व वज्र याम न॰ सम सं वज्र या सनील ह्रणे क्के उ ल्हस्व
बिल बन्ना क्ष मथ्यङा पुनयाल बन्व न सं बिछ्या कस्व ध्यक्का॥ ३२ ॥ ७६
वज्र सूर्य महा लो का॰ वज्रेन्दु विमल प्रकाश॥ चिन्ता मर्द्दि महा ताराः
विश्व वर्म्म होत प्रकाश॥ ह्नतेंगथिं तक्व संह्रुं श्री थाब ह्ला ध्व सपाल

सा॰वज्र ह्रपु ङा॰ गथिं तपुल्व लसा श्री सूर्य्यपूं॰ ङाह्र लमान्तनी प्रका
सपालाङा विश्वक कक्क॰ ह्नतेंगथिं न क्व ध्व सपाव थाल सा॰ वज्र हान्तातं
निर्म्मल तपु श्री चन्द्रमा॰ चिन्ता मर्द्दि श्रायन्ता ना प्रकाल याव दर्कु स्वलव
पाङा विश्व कक्क॰ ह्नतें ध्व सपाव ह्रुल॥ ३३ ॥ सं वज्र श्रावज्र पर्य्य
का॰ वज्र ४ सं गा॥ निश्व कर्म्म प्रभू॥ वज्र पाद्म ह्रव ४ श्री सन्त॰ सर्ब्ब ह्र स्वन

कोशसूक्त॥ महावज्रपाणिगणपतिं नमस्ये ॥ श्रीचक्रसंवरसा.सर्वकाम
नव्यूह वज्रासन.ध्व स्पात्रनं वज्र पा गुल्म क्षाग्य क्रोध सर्वज्वल
त्रपाञ वि स्फ्राक क्र.हनं पद्मघाक्र म चनं. स्पा हि ई.अ आ.ह नौ क्रहे
क्षवलाबनाक हनं ध्वसथालयाना म.सै गि गि धिय्या क्ष.गाथिंनक्षचल
सोसमम्मसवज्र यासास्त्र स्म नमस्तु पूजा म॥ ३४ ॥ विश्वमायाधनानक्ष ३ ग

वज्रविद्याधममहान्॥ वज्रगोक्षुमहावज्रविशुद्धवमा कृबः
॥ गाथिंनम्प पवम्यावम इ.श्री सं इ.व विश्वसे साङ्या.मायाबन लो
या अ विस्फ्र क क्ष स्वा मि सं इ.लहनं गाथिं क्ष कुबविजा क्ष.ध्मन स्वाक्ष
याविद्या साक्र वलमधंवानक्ष हनं वज्र जो कृ महावज्र स्थाय क्षय
कवज्र ज्ञा लि कि कृ या ह ऊ आ गु हिं गुच्वन्द्र हा स्वबज्र व व्र पा आ धि

म्हाकस्म पञ्चमार्थसमसम्या मूल ह्मानविशुद्धयाकलपखवन्तनक्क
लवैसिपूर्णह्रझक्म ॥ २५ ॥ द्धबुद्धमहायानवज्रधर्म्ममहा
पूर्वह ॥ जिनजिज्ञवज्रगम्भीर्या । वज्रबुद्धियथार्थवित् ॥ हनैगधि
नक्ष्मीह्र श्रीनाथानसामन्व्यागइ धखमान्वनयाकक्षहनैवज्रधि
कनै महायानड्रीयायाकूकवलहयाअनयानाकयामरखमहागम्मि

न्वगुनूवड्गिअनक थका माय कुनाणा ह्मानव्याकनैस्तिसयविस्त्रकः
क्ष्मक्ष्मलपान ॥ २६ ॥ सर्वपारमितापूरी । सर्वभूमीविभूषणः
विशुद्धधर्म्मनैरात्म्या । सम्यग्ज्ञानेन्दुसत्प्रभः ॥ गथिनक्ष्मनैहश्री
थालसा वज्रहमिप्रमस्त्रवनै । वज्रहमिनैथहडवनलपैथ्वानघज्
नाम ह्मानमान्वकूक्ष्मपलनह्मानदकीवाकपत्रीखमन्वनूमाया

३८

कीवनत्यैनीर्म्मलहृयाउाप्रकासयाकम्हसेश्रीसेहृश्रीहृव॥ ३८
॥ मायीऊालामहायाग॰सर्व्वकन्म्राधिपश्चपव४॥ सःमाहवर्वऊपर्य्यं
का॰निश्चपहेल्लकायहेहृ॥ हवऊपानिलथिंनम्हसेहृश्रीधकथाव ३९
सा॰ष्वमायीऊालन्माद्दिनेसमस्त्वक्षाम्हृयाम्हधिपर्वि॰म्ह॰ष्वसथानहृ
नीगथिंनम्हमालसो॰हृरवनक्षयपन्हलींकावनिसानमियाउ॰सीहृनं

सैंधवलयाऊम्वानम्ह॰वऊासनयानाउाविम्हाकम्हष्वसपाव॥ ३८ वा
समन्कहद्रसमकि॰क्निनिगर्हेऊगाथमि॰सर्व्ववऊमहागर्ह॰विस्व
निर्म्मापवक्रुश्वकू॥ गथिंनम्हथमेहृश्रीमाथकम्हसैसा॰समस्तया
मैकल्यानयाकम्हउहृमपुम्हिहृम्ह॰हृनैप्रिथिवीम्हाद्दिपनेष्वऊगाम
सैसावेधलवपम्हथसमर्कैछिनम्हायकथागनयामऊपवपसुप

नसच क्रम छुल सथ्प छुसीसाव दय कयाक पकाध्वन्व क्र यवन वपाऽवि
ध्याकश्क ऊल॥ ७२ ॥ सर्वसावस्वसायाएष. सर्वसावस्वसावर्ह्कृ॥ अ
नुत्पादधर्म्मो विश्वार्थ. सर्वसावे॥ ॥ सावभूकू॥ हनं गथिन क्रथमै ह ६०
श्रीनाथकश्चलसा०० ध्वनसमस्त स्वनं ध्यान यो नाऽश्यान तथऽन्तु स्वसाव
थिलुकना पाऽश्यान क्र जूलि स्वसायमान हृ याऽश्यान क्र. हनं क्र नगव र्म्मा

याथुस्वस्ववक्र. ध्वसीसावयाथुह हु क्र ध्वसपाल॥ ८० ॥ व्रवकङ्गनम
हाप्राहृ. सर्वधर्म्मावबाधहृकू॥ सर्वधर्म्माहि ४ समयाध्वक्रवाक्रमवि
वग्रयी॥ गथिनक्रमहाश्री ध्वनसोप्र काङ्कानवैज्ञाफहऽऽपीजनग
वर्म्मे ध्याजनाप्रऽ: क्रनाव र्म्मयाकानहू कप्रानीयाकः वनविऽाक्र
वेहलध्वसयाल॥ ८१ ॥ कि मिनहृपसन्त्रामा. सम्प सौवहवावि

देक्व ॥ पुण्य द्व ४ सर्व्वबुद्धज्ञानी । ज्ञानाग्नि द्व सम्प्रज्ञानाम्च व ४ ॥ हनेगर्थिनस्म
च्वक्व मेहश्रीयके आलसात्व सर्व्वसत्व प्राणियाक । दकायाम दयामा ।
याप्रसेन ह्याउविघ्न कोक्व पचेमार्थ ज्ञान याक क्क । सम्यक्त्व ब्ययाह्रुडी ६१
ह्रुपुण्य क्रयानाउ । ज्ञानयाप्रगुन नंक नैदिन्तवा ग्रिम दयाक ज्ञा ज्ञल मान
नैचानक्व पर्थिनक्वमेहश्री ॥ ४२ ॥ पुण्यवंग्यमा ॥ ज्ञानगाथा । छावत्वा

दियाकूवा पुनिपुण्यवक नायाज्ञानयागुवव । पियनिपगुस्मक च्व
इलः ॥ ॐ ॥ ४ ॥ ॐ सार्थमायकेपवच्सर्व्वोपायविध्यव
क ४ ॥ सर्व्वसत्वाहमानाथ । सर्व्वसत्वाप्रभावक ४ ॥ पुनर्बोलहने
गर्थिनस्म च्वमेहश्री मायक आलसाः हीक याय्गु कार्य्यस । मावक्व
दयाम्वाकाउ हमउ पायविघ्याउ सम्यक्त्व प्राणियाक दाषमहिन

गुपवमार्थद्कोः निर्म्मनयानाउञ्वानस्ञ् थ्वसपालसीसमस्त सत्वप्रानि
याकद्कानयस्ल गकृम्हकुलपाव ॥ १ ॥ ॐ ग्रसं प्रमम लेकः क्ष्हा
नविपूद्र्थ्य हा ४ ॥ धी म्हेमानवव ४ श्रीमान् वीलवी हस्तव पमूकु ॥ ५२
हलीपापदकास्वथ्वनयानाउ थ्वसीसानयागुद्दू ४ स्वहानोने सी हा लम्याक
क्ष्सस्लम हापमाकुर्मि भूनिर्दे ञिकस्ञ् ॥ हनैगर्धिनस्ञ् धावसः ऋ्ह

नमकृयाभूहकानमोन्वकृस्ञः तुष्ठियाश्रीस्वलावविउामश्रीमनवल
वपेश्रीस्लहावकहयाड्डाविर्थ्यवम्ह कृयाउा लर्यक नवकुपवलवपा
उाविस्माकक्ष्थ्वसपाव ॥ २ ॥ वाहृदन्दसमाकृपःपदनिष्यपर्ध
न ४ ॥ श्रीमद्दूः ग्रह्स्गाग्मःनागना लागनल्हेवन ४ ॥ गथिनक्ष्मेइश्री
थकवालसाथ्वस्लपोनयालपवालसाः सनश्चिकानाहानथ्वउा म्हना

ना पु का ल नी थ्व स्वर्ग ह्न याउ ञ्जिसा हाउ क्य याना उ ञ्जा का स्त्वे
प ति पूर्ण याना उ न ल्ये याना उ वि च्छा के म श्री म हे श्री ॥ २ ॥ः
कपा स्वन ना कुा क. मं हि म ह्यु ल क व च्छि कथ ॥ च्वस्व घु मि स्व ला ५२
का ना या दा ग्यु स्वन ध्व च्छि कथ ॥ स्व क पा मि गु ह क. ना थ्विन स्क मे
श्री थ्व क ख ल सा. थ्व स पा न या गु छ पा कु जिन. थ्व पृ थी वि से. स का हे

पा फ व पाउ. क नाउ का ल. थ्व पृ थि वी स थ्या कर्को. नि या गु कु जिन क ना
व स्का या था स. स र्व कु से थ्व स्का वा प स्वि नि या न्ह्र सिस स्वा उ मर्ने पा थि
न थ्व मे हे श्री ॥ ४ ॥ प्रकार्थे च य च मार्थ. प व मार्थ वि न ग्व व८ ॥
ना ना वि हृ फि व्र पार्थ. स्वि हृ वि हा ग स न क जि ॥ हनें छ प्र ने छ का व
र्म या मैं छू था व सा. अ हिं सा ध या गु व र्म्म पा क ग थ्विन फु ना भ व सा भ

वयाउ प्रानस घालकयउ फोन काऊ न्वान. प्रवमार्थ विनल नवायक्र
नरू.लङ्हान स्व नूपे ह्याउ. वेनन गानया फुङ्ग्मच वलैङ्ह्याउ ग्र.रहि
या द्व स नख्य. सिद्धा क्वादिन. नूप वल नपैन्वान स्म. ख्विल सह्ह्नानेजा
यनयाउन्वान स्क्ष ध्व सपान ॥ ऊ ॥ श्रु.एगघ ख्ल वार्थ वकि शुन्य कानकि ६३
नप्रवी ॥ हवनाम्प घ कित श्व लाव मृपमहान्वमि ॥ गाथिनव्म सहुश्री

नायालसासम स्क्राव सैनसह्उश्च शुन्ना कासमाथि सैनसहउ
क्ष्वसैसानस क्रमनेक्वादिने फानकाउन्वान स्क्ष ख्युलि.गु
हवनसैधर्म्मस.म हाव सहयाउविख्याका स्क्ष ध्वसपान ॥ ३ ॥
शुक्ल शुभ्राह व वल.सनक्ष स्त्रासस प्रह४ ॥ वालार्क सशु लक्ष्या
धमहासाता नर्वैप्रहु४ ॥ गाथिनक्ष सैह श्री वक वानसा शुक्लवपि

नाथसन्तचन्द्र इत्तुपूलछाय॰कडवामास॰कोसवामासयाचन्द्रमाल्पे
निर्मोनहृ खाआनाव॰हलेकनाडोंक सूर्य्यरथे थाउँ कबसिनसेहक
हयाआजिमाल ह्र फसयान॥ ७ ॥ ००ऽनोलायसैन्वीबा॰महातील ६७
कवात्रहेहू॥ महामनिमयूखशृ॰वृडनिर्म्मायहूव१४॥ नथिनक्षू
मैह्र श्रीरामलसा००ऽनोसवत्नपितयवक्रहाकुगुवक्रनकिसवि

क्षाकक्ष॰हलेगार्थिनक्षलैहश्रीरामबहाक्रजिहीवगु००ऽनोवथी
नगुकूनीहनेस्वहानाकस्र॰४थत्येधनलपक्षनाकिहिनरुवत्वम
निमानिकया॰निस्वाक्रनियाउांध्वनिसायागुनेऊनेक्रनिकेःसायुमा
नयानाऊ॰सहामदिक्षाकक्ष॥ ८ ॥ लोकथहुगमाकर्पिंल्याद्धि
पादमहाक्रमथ॥ महाह्लनिधनकत्वस्वकुह्लनिसमाधिनाहू॥

गाथिं नक्रमं हथ्री बा अलसा याक ह्निगुरुआ दिपनं ध्वला क अाडु तथु
ग्निया तथ्व ... हथ्रीनं सेम स्रीं हू या याकं हु लछ ड्डि सिथि वलनं सी
हक्व या ना डा वत व्वल न पु क्ष कडा धन गु ह्य नु या कल व वल न पक्ष मेत्री ३३
क नू ना म्ह दिकाड पक्ष स्रा दिपनं पका ह्य ननं ञा य न पुगु क्षमनयागु
हमा छिया नाडा वि ध्रु कक्ष स्व स पात्र ॥ २ ॥ बोधीं गक्र हस्त न मो दन्त

या मक गु छ्य द थि ॥ अ ह्रीं न मार्ग घ प वि त्त्म्य वैं वऊ मार्ग नि विकृ ॥
नै रा थिं न क्ष अल सा वा धीं ग थ या गु स्र न स : स वि ल क्ष थ्व ह्ला न ह्ला नं
थ्व ह्ला न या वा स नो थ्वीं क्ष : ग थ्व ग क ह्नु कौ गु न या ले म्हु ड अह्रीं ॥ ञ
गया सि स्या पत्र मा र्थं ह्ला न या त्र स्व ञा म ॥ १० ॥ सर्वसत्त्वमहासं
त्पत्ति सं त्पत्त ना ग ... म्न४ ॥ सर्वसत्त्वामनाञा क. सर्वसत्त्वमैत्री

ॐव ३॥ गथिंनस्मै ह्। श्रीनाथकअल साउ समक्त प्राज्ञियासे प्रह नैगाथिं
स्त्र्यङ्‌ ०व स्ता ० व यास्थने, सरा मडनि सँगा ३ आकास सेन्ड प मालस
मर्हीक्रि डा ऊ कुयाम्न सेँ डा केलप, हने भन याथि स्मृ गने सेँ पर्क्कुह
डा स्व स पानया॥ ब प स सर्वसत्वस्त्रियायँहू, सर्वसत्वमनाह
व ३॥ पंचस्कंधर्यमलह, पंचसेँ थ विशुड थकू ३॥ हनैगाथिंनस्म

९

मैह्। श्रीनाथकअलसाउ समक्त सत्वप्राणिपि यञ्जा सवया न चिहसं
हुन्वानाउ, तुफिनाहाछि वादिने पंचस्कंध्रियया मलव लादयं
स्वए थिविधाकुपामनी, आपधाकु मान मि, वायुधाकु स्क, निसयंस्व
आकास स्त्र कु, पञ्चज्ञाद लि थस्ता कुवी सकेथयाउ मल्वव डा स्व थ
पथिवि क्रा दिन डा गु त्रिशुद्धि सउ भ्री व मल पंचानन्कंध स्म॥ १२

ग। सर्व्वनिर्य्याणकाभिवृ सर्व्वनिर्य्याणकाविद ४। सर्व्वनिर्य्याणम
र्गस्क सर्व्वनिर्य्याणपदेशकं ४॥ ग। धिनस्कंध मे ह्रीं श्रीं बोधकस्कंध लस
मस्क निर्य्याणका भय। श्रावककयान महायानं दसकर्व्वर्य्याया ६९
ह्नुआ ह्नुयान स्क ज्ञान्यगा निर्य्याणयागुह्व सिअस्कं सर्व्व भयसमल
उपदगविय स्हुआ स्कं ॥ १३ ॥ वा हादसी गादवङा का। हादगाका

लसह्न ष्कु का चकुसमूनयाकाल ज्ञप ह्नानावबाय ष्कु ॥ ग। धिन
स्कं मेह्र श्रीं स्कलसा। सिमे निगुविकं नानीसीपूर्ग ह्र ज्ञाके सर्य्याया
मथुलयायुकङा विशुद्धि हदयाङा स्क। ज्ञानन्दयालया विस्कक
स्कं च्याका ह्नानङाक स्कंध स्कंस ह्रीं श्रीं ॥ वर्ष ॥ वा हादश काल सह्व
र्थ धाउगयाल कत्व विनु विभिरयाकाल सीयावि। विवङ्क ४ सर्व्व क्वि

ऽ४॥ गर्पिनस्म सैहृ श्री त्राभत्रसाजिमनिस्कसर्थ्ययात्राकान महिहृयाउा
धिम्का दम्भःसर्ष्यदव काया. मिरुकनानैसैहृ ककृपायाउ मनकृमाया. मन्त्रमि
उाम्क्, अम्भ गप्रकानयावुउवर्षामसवनू पक्हृ मा उा. गुलाकम्सान्हृतनविष
वर्द्धमान मिउाम्कथ्वसपाल॥ ९७ ॥ अनाभोग निर्म्मान. कायकोटि
विभावकः॥ सर्व्वज्ञाना हिम्वसमयः सर्ध्वविलकुनार्थविकूम ॥ गर्धिनस्म ३२

श्रीधकथ्वलसान्हसैष्यादि. सैष्यायायमनजिउाम्ककारिवृक्षयात्रिर्वान
दउाम्कथ्वसैसानसव्यकृनमाप्रवकैन. कन्विर्हृवलनपैंयासम्क. थ्वहृप
लहूल॥ ९८ ॥ नानायान. नयोपायजगदर्थविभावकः ४ यानत्री
नयनिर्याक न्र कयानफ्ले स्थितनः ४ ॥ गःथैनस्मनैहृ श्रीथ्वलसा. कृन्य
कम्हृकुयाः खिवानयानाउा. उयायुसिउाम्कथ्वज्ञावन सैसानयाउ

धाय-विरुसंघवलपूकृश्रावकमनयान.संउानकृङुउविसृवचि
उाकृ॥ १८ ॥ कृमाबाद्दुविशुद्धात्मा.कर्म्मबाउकृर्यकलथ॥ध्रा:
पादघिसम्हृक्षोर्भो.याराकाक्कावतिश्रिकथ॥ हतेराछिनश्रमेह ५०
श्रीनाबकबलेलाश्रनभगधापड्डथवडा॥किनयाउपायक्षाःदिनेमो
चक्रुश्रपापसमड्डयापानउावनुया.हउुकिष्यानतांसदासर्वेकाय

संचानश्रश्रीमेहश्री॥ १८ ॥ कृमाप्रकृथागेकृम.सृप्रहीनसवास
नथ॥प्रहृपायमहाकनूक्ष.कृमाघउगदर्पकृहृ॥ हमैद्धनहगाहुन
पासितकडाथनडुश्रीमपापदकामाचकुश्रमेहेश्रीकडाथुवेनेउ
उाकश्रवकालनाश्रमयानाउाविस्ककश्रेहानयाउपायस्मह:ड
पायव्याकृयानाउाश्वनलपृश्रडगाकसैसालयानहीकयानाउावि

ग्याकस॥ १९ ॥ सर्वसंशयप्रहीनात्मा विशुद्धात्मा निरावरणक॥ सर्वस
त्वमनाविषय सर्वसत्वमनागतिः॥ थ्विंनसं मेइ श्रीखलसा समस्त
नाम मद्र गुत्वानंचसत्वं पाउ विसुयकस हनं समस्त कि विसुयकस समस्त ७१
त्वाकया हृदय तविसुयकस थ थ्विंनसं पलमस्वलकया गाइका थउ सुय
जिउथस॥ २० ॥ सर्वसत्वमनाकाय सर्वसत्वमनोनुगः॥ सर्वसत्वम
नाज्ञादि सर्वसत्वमनावकि॥ थ्विंनसं मेइ श्री नाथक खलसा समस्तसंसा
या मनस्वान्तस समस्त प्राणिनपनि हृदयविषय मानेइ स्वाबा नस
समस्त संसानया मनस्वान्तस कउस थ्विंनसं मेइ श्री॥ २१ ॥ सिद्धा
र्थो विशुद्धआपन्नः सर्वज्ञानिविवर्जितः॥ निर्विकल्प धर्म्म अर्थ सर्वार्थ त्रिगुणात्
मकः॥ हनं सिद्धान्त ज्ञानरूप समस्त संसारयाकनो नावा थ्विंनसं

पवहृयाउ हमव पी हृउाङ्क॰ कानक प्रकीर्त्वान ह्नरवाप्या थसीसी ह्वाहाव उाक्त
नयाक॰ हाद्यक्रूसद्दा वकानी॰ हाव नाने सीह्रूक॰ हृउाङ्क उाङ्क पन्न स्युवसीमे
हूसमस्कृवृद्धयाह्वहा वव वलपीवानङ्क मीहृत्री॥ २२ ॥ पीचस्कन्धार्थत्रिका ७१
व॰ सर्वकृनविहावकथ॥ प्रकृउनहि सींवृद्ध॰ सर्ववृद्धक्षेत्रावहृकुव॥ हनेंनाथिं
नङ्क मीहृत्री नाथकक्षनसा ह्वाउनीह्लनने पूनयहृयाउ॰ हाङ्क न्थगाक्व॥

गुहावनेदको वृद्धयागुवक्ननने पूनयहृयाउ ह्न गुनक्रूनेवृद्धयागुनीसावृ
पहृयाउवद्धयाह्वलावहृयाउ त्रिस्त्र कङ्क मो थ्यवृद्धपनिहिहि नयानोउ
त्रिस्राकङ्कमहृत्री॥ २३ ॥ कृतेनाकायकायायक्ष कायकाटि विहावकथ॥
जूतक्षद्रूपसेदर्शि॰ नत्वकेउ महामुनि॥ हनेकाटिक्ष्लि भवील स्कात्मा दप
काउानक्षेत्रचूपसीदङ्गा॰ क्षयजून्याबूपदप्काउा॰ वलचउसम्बानगुन

श्रीकनैथ्व थ्वजस्व लाव ह्मस्यवानं थ्व ह्म मेह्रश्री॥ २४ ॥ सम्यकाह्ननाम
थ्वचकुर्विन्सकि॥ थ्व नि सम्यका ह्लनयागुरुस्वलि यपथुगु रत्नक॥ ॐ ॥
॥ सर्व्वसैवृद्धवायथ्यां. वृद्धवाधिवनह्रवथ॥ अनुकूवास्मनुयानि ८२
महास्मनुकूलद्रुयथ॥ हनैगाधिनह्म मेह्रश्री अमलहावृद्धयागुह्ननप्रका
सयाकस्र वृद्धयाअनुतनयागानकुसयदउ आङ्खलमडुसीलवत्रप.त्व

गुलिकुलयास्वरूपह्म थ्वमेह्रश्री॥ ३ ॥ सर्वमन्त्रार्थजनकोमहाविन्दुव
वड्कवथ॥ पैवाक्रनामहाशुन्या. विन्दुशुन्याषेड्कव॥ हनैज्ञाखलविन्दु
माप्रथ्वलपुस्कनमावृद्धायथ्य [illegible] ज्ञाखलथ्वशुन्यफाहडगुस्व
रूपविन्दुमडुआङ्खवन.षड्क्रनियाथ्व [illegible] नपैचनथाय॥ २ ॥ सर्वाकाव
निलाकाल.प्रतश्राद्धाईविन्दुस्वरूप॥ अकलकलनानीकस्वरूपध्यानकाकि

ध्रकं॥ हनेज्ञाख्वनमदुःजिमषुउलियावङ्कियावङ्किपावलज्ञाख्वल॥ विन्दुस्वव
पधवलयेविध्याकम्भ॥ थथिंनगुक्र थिंनगुथकंक्षयमजिउवाकनेयायजिउ
थ्वपावनस॥ सहज्ञानन्द्रसकका हु॥ वाक॥ या यसजिउ॥ ३ ॥ सर्वज्ञानकला॥ २७
हिहः॥ समाधिकुलमेन्ह्रुविमुक्तसमाधिकायकायाप्वं॥ सर्वसौगतकायस्व
नृप॥ तसमरूज्ञानयाकसमस्तैसमाधियानाउथवलप॥ समस्तैनानामङ्वगाह

सहागनपुष्प तसमस्तयानाज्ञाहयाउविध्याकम्भ श्रीमहेश्रीहृन॥ ४ ॥
निर्म्माणकायपकायास्फुरणं॥ वृधतिर्मातर्वेणश्चक॥ दशदिग्विश्वनिर्म्मान
यथावज्रादर्थकृत्॥ गथिंनम्भ मेह श्रीवैकेचलसलानिर्म्मिसमावद
यकुम्भ॥ वङ्गयाज्ञानन्दवस्तुदर्शनविडाम्भ॥ हनेदशदिगाविश्वनिर्म्मा
नथेयाउदसदिगज्ञादिपनिहबनदयकुम्भ॥ थथिंनम्भ थ्वसीलावर्या

उपकालिस्कं द्याऽविस्कं क॥ ७ ॥ देवा निर्द्वदय्यद्र.सु बश्री द्यानबोधि
य४॥ अस्यंचन्द्र स्तन कुम्व प्रल पस्ते मथ्रश्वब४॥ ह्नस्नेगा थिं नस्क मेहे श्रीस्व
बस्वा चम्भं ध ङु मेहे श्री ध्व सेक्तिब हाम हा सेध्व दब धासं ने दच गुरुप
ध्यानेगुरुं समस्कं दंवयानाऽ ॐ सुत्ते ध्व सेसाव यागुरु समस्का दान या:
ज्यःथिं पनिस्वाय देगु याम्त विपक्ति ध्वस्कंद व्यः स्वान्ति. समस्कं दं वयागु ८५

ब प्रथमगानसें.ध्वसपाव.थहिंगनया:ॐ स्वनत्तेमहेश्री द्यव४॥ ६ ॥
उ श्रीर्घ्‌ हव कांकाव प्रकसाक्षाऽगकृगुब४॥ प्रज्ञाक दशादिगुलोक.च
र्म्मदानपक्तिमहानू४॥ ध्वगा थिं नस्क मेहे श्रीना ध्वकःश्वास्सा ध्वसेसाव हा
नाऽद्वर्भ वनया॥ पाबेऽनस्क समस्कऽ गकसे सास्वेश्रा गुरु समस्क ध्वऽगाक
सेताल याग सि ध्यःवक प्रध्याक याना ऽ.ध्वदशादि गःसि क. सें प्रध्याक यान

ञथर्म्क्षयादानयाकम्मिगृहानीथर्थिनक्ष्यामहिमाइव ॥ ७ ॥ मेद्रीस
न्वाहसैनङ्कःकनूश्चावलवत्मिकव ॥ पृह्वाम्वङ्कवनूर्वांघःक्रीमङ्गनव
धैङहवा ॥ कथिनक्ष्वमैङ्गौवाधकश्चलमामैद्रीसनाहसैनथाय ॥ १३
लमलृ ॐ मिकृहाकठास्यैसनाङाठर्थ्येकनूनोहाकनानैकनेडूठवङाव
ङृङकहानीःथनूकवनोथलनपृक्षःक्रीमहाकठास्यैःयापमान्वकूक्षःसी

म्रममैक्षान्वकैन्वानक्षथर्थिनक्ष्मैङ्गीहव ॥ ८ ॥ मावाविमानः
ङिर्द्वोवःन्वकुर्मालहयाक्कहाकू ॥ सर्वमान्वमङगाःसैवक्काल्लाकना
यक४ ॥ नथिनक्षमैहेश्चीश्चिवलावृक्षान्क्षादिनैसाम्बनानयक्षिविघृवृडू
महचलध्वकपाक्षहयाकङयलपाडम्बानक्षमैहश्रीःङनैगाथि
नक्षमैहेश्रीयकथालहामालयाहयमान्वकूक्षसर्वमालन्वनृहर्षि

देवकाकाय. समस्त मालुयाः त्यमाश्व काउाह्न नषलव पाउाविस्राव
धमपाव ॥ ९ ॥ वन्दे पूर्ण्कहि वायश्च. माननीयसर्वानि प्रलउाप्र
चनीयाकमामान्या. नमस्ये पञ्चमं पुन्हू ४ ॥ थिंनखसें हृस्रीसाल १६
सासमस्तस्यनें. नमस्कारयानाउाकउाक्ष हनेपूज्याथानाउा फउाक्ष
थउा २ हू. सताकउा त्येक्ष. थथिं नक्षपवमक्षवमहीत्रीपवमपु

॥ १० ॥ ईलाककक्रमगाहि. थ्यामापर्य्यक विक्रमं ४ ॥ ईश्वियप्रगि
यपन. छउ हि हू षकनूल्ल कि ॥ थिंनख मेंहृ. श्रीमाध कश्रावसा.
लाव. नमियकम क्रिउा महाफेउा धलवाखिश्रयह्नान. सखिनधलव
याउाविश्रा कक्ष. हनेपुहा [illegible] खिमा [illegible] तेउा दिधलनपु
क्ष कन्याकाश्रानवायेखिद्धाकक्षधसपाल ॥ ११ ॥ वाखिसत्वामहा

सत्वलोकान्मीनामहद्धिकः॥ प्रज्ञापारमितानिष्ठः प्रज्ञाकल्पत्वमार्गकः
॥ गाथि नसा श्री मैत्र श्री नाथबालसाथ मे सात्वयावाभि सत्व महासत्व मायका
डा पत्ना याय गु ज्ञान वज्र थाय याउन्वोन व्यवहारे थन्या नेपवाबि सत्व याग ष्वलीला
वला कयान प्रज्ञापारमिता या गुह्य नवलदान बि याउ सत्व मम हिमा ष्वने
नाउ प्रज्ञापारमिता गन वा गुन पथकना विज्ञा कया थमिह श्री॥ १२ ॥ ज्ञात्म १८

चित्रान विस्त्वर्व. सर्वोपाहूग्रपूगल॥ सर्वोपमासहो ज्ञाना हृय ज्ञाना
विपठपत्र॥ गाथि नसा मै हे श्री वक बाल साथ ड आन्मानो. सिय दुः
खसत्वबध ना उ ष्वोम्बवी हान पूम हन सम कलाक यान वायप म
पूस्व ओ दिनै सक ही व बलपू म. सेवगाया ता व षष्ठि ननपि ठ्या स
उत्वमा कयाम ज्ञि उायत्र मार्थ ज्ञानत सेह का ह स्य वि ज्ञा कया ॥ १३

॥ धर्म्मद्ध नयकिं ध्रुव स्वभु मद्धार्थ दशकठ ॥ पर्य्यु यामोकमाज
गर्हौ निर्य्यां ग दृ पयांतिनी ॥ ॥ थिंतु धर्म्मै इ श्री स ध्वं ... सा धर्म्म
दानयाकंमं ध्यम उ हृ मण्डूक ॥ हतेमहामद्रादि डौं वंधुमश्रासडा १८
नमस्धउपदसविडाम्कः हनेश्र यकपूषिकमहायानडयद्ध्याश्रिडाम्
हनेऊ गाकसेलानसेध्वसपालयानपडा यायडा ताम्र पश्र इ ध ॥ २४ वा

परमार्थविशुद्धश्रीस्वे स्वाम्भु हतमहातु ॥ सर्व्वसेपकुकलथ श्रीमा
तुमै इ श्री श्रीमकाच्छन ॥ ॥ चिंन धर्म्म मै इ श्री बालिला श्री बालिला श्री वनदा
नप्रयवनार्थ निर्म्मलगुह्यनानिडा म्र श्री अनंदसी बौ सै दैध मावस इथ्या
डाम्र्यकिस्वयधर्मुकिं कि न हनें समस्त सै धाकि द्वियदस्प स्तुंसिंनदा
ननुपए श्री स्व लाय मान पालडा [illegible] सान्न बनसेपर्व्व

हुडाम्ह श्री मेहस्त्री ॥ १७ ॥ कृत्यानुष्ठाननाम पञ्च दशमः ॥ प्रति
क्रियायाय पुष्ठान नेरवनायु रवप्रि मृत्यपुष्टु स्मकष्ठ ॥ १८ ॥ ॥
नमस्तु वज्र वज्रा फल कलादि नमस्तुते ॥ नमस्तु स्तुन्यकागाहुक्व
कुवाविनमास्तुते ॥ हनेगथिनमहर्मेहस्त्रीवा वालस्वा श्री वज्र दानय
स्मादविय घाउ ओवउ याका वया न कथ्याक नमस्काल हृ नेद वाणि हि ९०

स्पदिनेपञ्चकहतनश्रालायाहँ नमस्काल हनेहँ नाप्तगाहँनेङाय
नपष्कस्तानधनल पुष्ठयाहँ नमस्काल हनेवदकान विउञ्चस्याहँ
नमस्काल हने वाखिस्तान धनलय पक्कयाहँ नमस्काल ४ ॥ १ ॥
वज्रवाग नमस्तु वज्रकाय नमानमः ॥ वज्रश्री निनमास्तु वज्र
ड्क्ष्म पदनमानमः ॥ हनेगथिनम वज्रवागवाय ५ कमहस्त्री वालता

श्री वज्रयोगाम्बराय फलपुष्पयाके नमस्कार ४ हनेवज्र यासवोल थलव
पूजायाके नमस्कार. वज्रयामेश्री महाश्रीकिरणक पूजायाके नमस्कालया
नाडओवानहूलव ॥ २ ॥ वज्रपिकनमास्तुथं. वज्रहासननमोनमः ॥ ८१
वज्रवावन नमस्तु. वज्रहावान नमोनमः ॥ हनेनमनसहानपुजेसाय
कपूजायाके नमस्कार. साहतेहीवाडओवान पूजायाके नमस्कार ४ हनेवज्र

श्रीकालचक्रनानेवान पूजायाकं. नमस्कालयाना ॥ ३ ॥ ओं हवोरुहवनम
मस्तु. नमस्त. वज्रसेहवः ॥ गागनोदहवनमास्तुथं. नमस्त. हान
सेहवः ॥ हनेलानव हनेज्ञायवपूजायाके नमस्काले. हनेहानल
लिवथलनपूजायाके नमस्कार. श्रीकासम्बिहयनाडओवान पूजायाके
नमस्कालयाना ॥ ४ ॥ मायाक्रोसान नमास्तुथं. नमस्त. वज्रनाककः

॥ नमस्कृ सर्व सत्वया ज्ञानकाय्यन सास्कृ ॥ हनै मायोआन कन्नु सउन
स्कृ ... मैनमस्का ले हैं श्री ... मैं लि सू याक कू ... या नैनमस्का व. कृन ग
ध्व सैसायक ह्ना नस वैव पैव्यान मयो नैनमस्का ल. सस ल स्यैनैनमस्का
व. ह नैन्नृ लाध्व स मायाआ व याउ पदं स विया आ वि ह्ना क स्वया नैनम
स्का व याल्ला आ कउ आ स्नया नैनमस्कान्न ॥ ॐ ॥ कृं कि पैव कथा गहल्लन ८१

म थास्कृ कि पञ्च ॥ थू हि कृ ल सानै पैव कथा ग कथा गुह्लान उस्वनियास
हो मा ह्ल न मस्का व याउ श्रीके हो पू गुह ल ॥ ॐ ॥ ॥ कृं थर्म सो
व स्पा घि व ऊ व व क गा व का ह्नान मुर्हे सर्वै कथा गा क. ज्ञान काय
म हस्त्री पा वि शुद्धि का म पा दा य गि ॥ ह वन्न पा लि ह व ऊ थ ल स
जालू कथा गाक या ह्नान स नी ल कम से हो श्री ज्ञान मर्हिं ह ऊ आ स्का

थिंनस्क्रं ह्मानमूर्त्ति आवसाक्रनलंलप्रीक्रिप्रसाद उत्य हि ३ आक्ष
थथिंनक्क वर्म्मसीगिंकियाकलकोपुवाकुं विहयागुथें ह्मनथाय
विसय्याकय,थथिंनक्क,यानाम,सैगिकिआयहृ॥ हेपुनवय ८३
वया पूनर्वाल,नथिंनक्क नामसैगिकियाकलग्रास्नलसा,सम्मस्लेकथाना
कयाकु,गुष्कनेकयामह ह्मानमहावहुंगुकगुम्ननलकन्यालय्थकेनडं

वाविह्मानहुं मिस्य,समस्कनथ्यागकयास्तागकिस,समस्कमलपापडिवि
ऊनथेस्कनकाऊविश्चकक्क नाम,सैगिंकियाकलं॥ हनेनथिंनक्क थ्हक्ष
नाम,सैगिकीयाकलं आलसा॥ वादसयात्रविहामय॥ किगुविवलन
वक्कध्वक्क नाम,सैगिंकि थलवेपाडा,कथ्यागमया,ह्म नवाम॥ हनेनथिंन,
गुपदवानथा आलसा,ध्वनाम,सैगिकि थलवपान्वानान,प्रसकामहा

यानयाथानमप्र ह्निया कीं॥ हनीवक्कस्यनं ध्वनामसैगिफिवलनपुउ
क्कमनस्त्यया.मेहार्स प हिनायूउ.महायामयाथानसन्वानाउमहाम्
यागियानाउ.ध्वनामसैगिफिवलयान.ममसी दुगोंफिसउानम ८८
न्वान॥ वक्कस्यनं ध्वनामसैगिफिवलनपाउखान.उमसया.क्रच
महाहयहवनतहयूउ.ध्वनामसैगिफिवलनपानंक्रक्षमहाहयमो

नहव॥ ॥कहमानस्लैहयानिश्चय॥ कुकुलयथालसाम॥ अउया
हयय॥१॥ बोनयाहयय॥२॥ नायायाहयय॥३॥ दुहिक्कुपाहयय॥४॥ ध्व
फनेकनहयाहयय॥५॥ देवयाहयय॥६॥ ...दाः पा॥७॥ पक्कया
हयय॥८॥ थकिजक्षमहाहयध्यानाहवनहयूउ॥ ॥ दुःस्वप्न
विनाशनकर्त्रीश्वय॥ मलिनपुफलहूदायाःकृ.ध्वनामहयूउ.

नैश्रीनाम.सैंगिकियाकुप्रसादनाक घ थकथायमाघ्रनै॥ या
त्नस्मीर्मैथय॥ थ्वछमनकुनै.श्रीनाम. सैंगि किंवकंनामकयाः
माघ्रनै थ्व थ्याघ्रुयाकंत त नयइन.थ थिंनगु.ड्रखव थायमहि ८७
तगुहयथ्वपौःथनस्कत॥ ॥सर्वमाया॥ थायसमकमानयाकं
र्मिविघ्रयानाहय्याउ.हवनइयडा.समसकुसनपौःथस्कनवाक

समस्कमननयागुवौक्कुयानागुकार्यसकलनइयडा.समसकडखव इ
र्दोकिसहि हगुमहिं.थ्वसमस्कहवनइयडा.समस्कथ्यागवयाः
ज्ञासिव वोकूडा.थ्वनामसैंगिकीथवलपौंथानथयाकबातरुव
ह्मनबोनाडाकथ्यागकथ्यापदसडानिडा॥ ॥ ज्ञानगथववमैथ्य
र्यसम्पवसैंकवि॥ हनैक्ष्मावाहवनडीकिहयौडालक्ष्मीमहाप्रा

पी हृकूडा श्रीस्वला वसाकिहृयाडा कल्यान सेंव थपहृ पीडापथिन

म. कृस्व वाक हृवक्र पाहिम हाल्मा लाडा केश. मध्याता कनूपहृ कूडा

मह मेंगा हृ थिडा. थ ना मसीग्रा कि ड ज्ञाल याकधूयाक ।। ।। क्रयस

कृ हिँ सेंपल्क. वि ।। हृवक्रपाहि. नवम्र स्यल थगु वि नाम सेंगिकि ना कृ

पाय ड ाध्व म्रयास मर्लला कनें क्र स कृ हिँ हृवकृ ा कूडा लम्कु कि पाल्कें

८८

डा हृन ।। ।। महाहपच्चूपसमनवक्त्वि प्रहृ विडा गात्य विग्राना ।।

घुवि ग्रा थिन वक्त्वल याक डाव सा. समर्की व्यापिन कै स्या डा न्वा

न क्रया व्या थिल पमम्मा ल घुविग्रया सिमें ग्रु विप्र हृ पुडा ।।

।। हूनम[illegible]का ।। हृवक्रपाहि. मम्रस्यल थना मसीगिकि पा

नपल डा व्रस यो. सन्यवानम इ क्रयो. लनवदपिडा ।। डजा

त्र याक श्रीदयोआलपनेथपाण्डु छुँ मुइ व याकछु दयोआ. स्नानेव क्राम
याकुष्व पाकव क्री याक. श्व दयोआ हेनेइ दुहिथ्व मइ याआन्या नेश्व पा कडुरु
काले दयोआ. थपिन्त्रगु ध्वना मसेगिकि राम स्वनवा जिआ. आश्च त्रा प मा ८५
त्र. थथिनगुगुन स्व याआ ॥ ॥ यन्यनन ॥ हत्वा ऋपाहिथ्व नामसैगिकि
याताधर्म्मइ पुआ गाथिनथाल सा. मैगन इयोआ निश्च पनै ॥ ॥ दीपरक्ष

य ॥ हे यक्षपाथि व श्व स्पनै ध्वनाम सैगिकि. पाल पल आश्च मया दिन नाक्री
सम दयके सकइ ल्यी. श्रीध काव हस्थ्याव गुथ्ये स. मेद व्योना कया थ्वें
निर्म्मन इस्पथ्वा ने. हनै गनिम इश्व याकइ लमा नागति नाव. इ लेश्र
नुस्तनपदनावित ध्वाता नन गतिवाक बयोआ. हनै गथिन श्च मैइ श्री
यागुरुन वायआ श्चलसे ध्वसे सावसमडकनयपाक कश्रीमा ऋगति

वाकक्रमा ॥ ॥ सर्वकर्माथायवः ॥ दयावाकाथ्वसमसफञहान इयाउवान
दिये ॥ ॥ कर्मयकोल ॥ थायकूद्दशिदूक्षयाक कूदिंहूमदस्यउनिउं थ्वना
मसैगिछियवलपक्षयाक विंतानलिवत्रयाथिंगुछ्लनायीउ हनेगा ८२
नगुहलवायीउ थवनलाएमखस्यनेथ्वनामसैगिकिपवलपीउ थ्वक्षया
ननलोवनेमनावथकूक्षयानागुत्री सिछिफवल.पीउहल ॥ ॥

पवस्व द्वथाय ॥ हवजपानिखक्ष मनघानथ्वनाम सैगिकिवक्षस्यन
नकमननेवानिउ ओक्षमन ऊया छावल किस्वान सैपन्न इयीउ व
गथिंगुछावनु किस्वाक्षय. दिवान्चइथायवानन कूगुफथागकपनि
स्यनेखनाउ एवी खनिउ कथागफवदनयायीउ. हनेगथिनक्षघदूया
त्रेमिकाह्ननवायिउ घदूपावमीकाथायकूकूधलेसा ॥ ॥ धानथावमि

ता ॥ १ ॥ शीलपारमिता ॥ २ ॥ क्षान्तिपारमिता ॥ ३ ॥ विर्य्यपारमि
ता ॥ ४ ॥ ध्यानपारमिता ॥ ५ ॥ प्रज्ञापारमिता ॥ ६ ॥ थ्व खुगू पा
रमिता परिपूर्ण ज्वयाउ ॥ दानपारमिताध्याय ॥ थ्विनागु धावसा ज्ञानदे २०
नसयनासनवसनम्सवर्ण ज्वयामसिमू क्रिविदूर्यावजसीरवमिलाप्रवा
कवूपनजगवल्यागायावक्त्ड्याकि दानपारमिताध्याय थ्यमि ज्वलायि

ओ ॥ १ ॥ शीलपारमिताध्याय ॥ हनो ॥ थ्विनम शीलपारमिता धालसा शील
पालमिता धावलव पुण्यन नमनमवनीमरूओ को नमवलनप्यरूथीओ
समस्यलाकयाख्य दोहमव्स्नमनसा वंम्याकर्म्मनान ससाव पुण्य
थ्विनम शीलपारमीता प्राप्त ज्वनथ्वनामसैमिकिपनलपानै ॥ २ ॥
क्षान्तिपारमिताध्याय ॥ हनो क्षान्तिपारमिता धावसा ॥ थ्विनम क्षान्ति

धय.ङ्क मालमस्कलायाउङ्क मायाय ह्रयीउ॥ मवनैमस्हकाङ्क मार्धम
याय सामर्थ दयूउ चेथीं नगुक्काम्त्रि पार्व मिकाया ह्मन तेपर्हं ह्रयउ॥ २१
३ ॥ विर्य्य पारमिताध्याय॥ हनै विर्य पावमिका ध्याय.म्ह ह्मपलार्क्षमि
ह्रयूउ ङ्कू सेप याङ्क मिङ्गाव मा.थउा गुङ्कन्द्री घमाधन याःख सउा ख मि ह
थ्यीमवनमस्हकाथमनैमहि छ ङ्कन्द्रीपर्व धध्याय.वैखनयाथेउ लिसेथ

थिंङ्कद्विर्यपारमिताध्याय॥ ४ ॥ ध्यानपारमिताध्याय॥ हनै ध्यान
नुपारमिताध्यायगुणथिंनउआलमाकोलनीकास्त राङ्वनायान्नाउ
ह्रुन्याकाङ्कूयाङ्क मिर्दनं याडीतपव मार्थ माव हमा थ्रि ध्यानपव ६४
य.सामर्थ दू ध्य.थ थिंनथ ध्यानपारमिकान.सेपूर्ह्रं ह्रयीउ॥
५ ॥ प्रज्ञापारमिताध्याय॥ हनै प्रज्ञापारमिताया मथ.यगथिं

नक्ष श्वनसा क्षा दिंमडु. ऋर्मंमडु. लूपंमडु. ला कालीमडु. घ्र. नेवास्मा
स्वनूप. विश्वव्यापिनक्ष. कोबाङ्खि. ल. या गान्धवमडु. क्षा थींमडोंडाय
डामनने ला नपूरवमडिडो. महाकस्वस्वनूपक्षला थवेनें स्वयमडि ९२
डाक्षथिंनक्ष प्रह्लापाव मिनाल सैंड्. कोडुडा. त्वक्ष स्वनें थवामः सैं
तिह्निवनलपैं चानक्षयाकपदविनायडा ॥ ३ ॥ पुनवपर्नेवकपाः

थिवकःथव ॥ ॐमी नामसैं तिह्निना मन्चूडामनि ॥ हवडयाहिग
थिंनक्षश्वाल स्रोध्व नामसैं तिह्नि. नाम यो चू डाम हिनाथपरय
ध्वकश्वालस्य ॥ ॥ सयमाक्षय ॥ हवडपाहिनाथपन्त्रपैश्वानस
नयानसपनाडा तडी. हनेंप थिंविसलयाडाःकडा ॥ ॥ पुनूस्वथाय
॥ मिडनने वानकडा ॥ ॥ स्नीडनक्षय ॥ मिसानस्पनें वानहडाःस्वमस

नैगथिंनगु स्कूलनाकः बाथकबाव सा.गमान कजगका वांछिम त्वपनिस्यु
न.थन्यपदवियाउा.श्रीनियापूउा जक्कायापूउा हनेथ्वस्कयापोल्वलने
ववयलसे दूर्लनिहिं सउान्यमूम्वपोउा ॥ ॥ पूननवपलीवऊयाहिंबा हक्क ९२
यवववऊप.छिहनेगथिंनगुस्कूलनायाथीउानाधाबसा.थ्वनाम.सेगिकिप
वनपिउाक्कयाकं.हनेथउा क्कूस.थ्वपसूक.ह.कोदयकाउा क थिउा.एाम

स्यनउाक्कयाग्रु स्यबायाथीउा.उाक्कसया.नीन्वगुकनसगन्मह्यम्वान.ह
नैसम्कुन्नम्कुनेप्रहालनयाउा.ह्यम्म्वाल.थ्वक्कक्कूइथीउाक्कालसावङ्क
कूसमथागाकयागुकूनसइविस्यमाकुउानदथिउाथ्वक्कयाक ॥ ॥
पूनवपलीं.वकृयाहिंनप्रपाप ॥ हवऊपानिएामक्कस्यनेथ्वनाम.सेगि
किथनलपीं थान.नवक्कस्यनें.पनलपीं.थ्वपाथयाकउाक्कस्यनेजनल्नेस

थ्यवं वङ्गयागुह्लानसें पापक्ह्यू ॥ ॥प्रापणीं आयमाथ्वह्लानवा
यडा. माक्ने पद्म्ायिडा. थथिंनं क्कनाम. सें गि कियागु [illegible] हिमाह्नव
॥ ॥ॐ सर्व्व धर्म्मालनुखलाव विशुद्ध. वजाग्र क्ला ॥ श्री ज्ञ्व प्रकृति
य विशुद्धा. सर्व्व धर्म्मा यड्डन सर्व्वे कथागत. ह्लान कायमंह्न श्री.
य विशुद्धिमा. मूपा दायकिकल्ला ॥ सर्व्व तथागत. हृदय हननल्ल ॥ २६

ॐ वाल क्षायथ्व पवमाङ्कनस मक्रु धर्म्मयागुखलाव. निर्म्मलह्नय
डा दाह्व मदयाउस्वाहगु. थ्वनामसें गि ह्लिधयागु क्रक्का निवनव
सकिनदयकाह्. ॐ फ्रं. नें क्रं क्षायथ्व सें साबयाक्र क्र पर्य्यक. मा
क्रानिखे. क्रक कावयागुह्व थ्वह्लन ॥ ॥ ॐ ह्रूं ह्रिं हलनावनह्म
नकायवाग्गी ध्वनमहाबाच. सर्व्वधर्म्मागगगनामललसपविशुद्धेव

र्म्म थाकु ह्मा वगाटूह ल्ला ४ ॥ हनेंथ्व ग्रिकुल क्षा ख्व लनं मेंहृ श्रीया
गुसबोल हृ. व. स्वर्गनस ध्याया माव स ध्याफ मानयानाउ विघ्न क
गुथ्वे ह्मनम हिं वा नीं स्वल या गुवन्धे नया अ थि पर्मि. सव थ्व फि २ कै
यामस स्वात क्र. समस्त धर्म्मस्वरूप. गागना मव धाय. थ्व क्षा काम
पिं. निर्म्मवनु. धर्म्म थाकु या गुह्मान. आकास स. नाहँ स विघ्न कथ्व

स पान हल ॥ ॥ मकु विनायाउ ४ ॥ पृथिथ्व ह्मान या गु मेंहृ श्री
याम कुया विन्यास थ्वव हल ॥ ॥ ८:(०:) ॥ ॥ अथ
वजवव ४ श्री मान. हृ हृ कु ह्म क्ष नीउ लि ४ ॥ पृ हयाथ पसींव
हगावकक थ्वगतें ४ ॥ थथिन स माग्र मनि कथ्वगाक अर्क ६ना
ङ. वजथाग्नि हृल सानञ किमिं. हर्ख्व मान पोनाउ. थ्वस व हृ नामात्र

नैलै कुक्यानाग॰ब्राह्मकतियौ हाञ्जाजल पाउं॰श्री कुंमाक्ष्मस्तनियाक
वैद्नायाना उम्वानह्लै ॥ १ ॥ अन्यो ध्रव ह्रिविधैनाथे॰गुरुं
वज्रपाणि किंच ॥ स्तस्मात् क्रौधवज्राभै॰प्रावम्वावै सिद्देवव ॥ हतै २७
ध्रवज्रवल वाथिन क्रोखलता मा क्र्यानाउ॰कउ अक॰गुरु क्यानाउ
वज्रपाणि प्रहि मिनैद की॰क्रोध नाउ सहि लने॰कउम्वान नै॰गध

याना उ॰ध्व स्वलसै॰स्मस्कस्यनै वचन पिकल ह्ल ॥ २ ॥ अन्द
मा हासह्नाथ॰साधुसाधु गुरुपिकं ॥ कथास्माकं महानाथ॰सैर्व
कैं वृद्धश्च प्राप कथ्यौ ॥ हतैनाथ वज्रपाणि न्नादि पननिस्यन क्राल ध्व
ल साहनाथ ह नासक्ष्म निउँ पनि हर्ष मानह्ल॰ता ध्वेसाध्व क्रकि
उ लुमगुध्वनाम सीतिकियागुवाक्ष सव्ब नैजिपनिम॰छुन पान्वपं॰

निस्यनद्याक्लू पा द्यकव.नछायन गुकार्य्य याक्वि ह्निं स्कवनी ॥
३ ॥ ऊगानक्षः स्वनापत्यु विम्ह कि ह्नलवीक्रिया ४॥ स्ययामार्ग
विशुद्धार्यं मायाजालेनयादिक्ष ॥ पगुंरवेगा थिंनक्ष स्वलेसाध्व
गानसीसानयाश्राकृमांगिगु विथ्वकाप्तनायाकक्ष यानमाकुयानक्व
गु.वाल्यानशुरुपुव न्वदानविशाक्षनह्नन ह्ं हिंकुमान्वक्यु पिवि २७

ध्व.राक्षस्यनैज्ञानक्षानसा.माथ्याकानन्छागहिंकुक्षायध्वमायाः
ज्ञालसपूगुकनकुसक्लास्यनयागुथ्वरवड्गन ॥ ४ ॥ गम्भीरादान
वैपुल्यमहार्थाज्ञगादर्थहकन ॥ वज्रज्ञानीविषयाधक्ष सम्बोधिवृद्ध
हाधिकमिकि ४॥ थ्वगाथिंनक्ष मैत्री श्रीश्वलसाहवुगपाद्धि गीहीन
क्षाय.गाथिंनक्ष थ्वनाम संगीति क्रियागुरवश्रानेसान्हैं हिंकु.गाक्लिं नडुलि

थ्विंथकथाहासिनमड्.ह्मायमङिँउा.थ्वहामँङ्ङ्क्ँमड्ङ्ड
मगुकत्वह्मान्तस्व.कउाचनगुथ्वत्र्र्थंदवलोकयाव् यः ङ्ड
पकावयाकगुथ्वघमवहामषुसमस्कथ्वकथागाकयाखनसँप १८
ह्मिस्यपाउान्वानगुसँम्थवँवङ्कमोक्वम्हेलिपलिस्पनक्राँदसवि
लगुह्ववथ्वहान॥ ७ ॥उपसँहावगमथा४यन्चङ्४॥ थ्विंउमसं

हानयामथागुडापगुड्स्मका॥ थ्विथम्मसंगितिह्मान्मागुथ्वापुसं
साथ्वहवहान॥ ॥ ॐ ॥ ॥आर्य्यमायोंजालाट्वोउ
सोसाह्म्निकाःमहायानाकनुमक४पाकिसमाधिजाल.पट्लोइह
गावकंकथानाकश्रीमायमनिकुषिकरतेपावनीमंड्क्ष्श्रीखनस
च्वयपनस्मार्थ्यनामस्तिगितिपा॥४समापक॥ [illegible]

मायाजाल कन्कु सफ्रास्यकयागु जिमघूदाल गैधस मगुजोगा

स.ध्व कन्कुस्वानगुध्व मनपत्रजोगा स्वानगु.न मांधिजोल

सधिका स्यकयागुध्व ख ग्रीष्म ब्रह्मन्ति नै फ्रानाओकयागु ख.म २८

ह्रःश्री ह्वानेस विलनधनलपै विघ्न कगुध्वपल नाथ्वेजोगाना

मसैगिकियागु ख पकिस माफङ्ग न४ मुह४॥ ॥ध्य थर्नी

हरुपुल वा४हम्कुस स्वेचजानी गथस वल्ले गंखीत्रजानी:

श्रःध॥ नुवैवादिमहाश्रमगानै मुह४॥ ॐ ॥आदिमवै

वाःसर्वठासविनदोललविदैन पन्दितास्वथनीयमहवर्णे

हयाने॥ ॥मुह४॥ ॥

ASHA ARCHIVES

